

मुकदमों का विवरण

सुनिल

वी.

एन. सी. टी. दिल्ली राज्य

(2011 की आपराधिक अपील No.688) सितंबर 21,2023

[ऋषिकेश रॉय और मनोज मिश्रा, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए मुद्दे:(i) चाहे साक्ष्य के आधार पर, अपीलकर्ताओं को एस की सहायता से दो मृतक की हत्या के लिए दोषी ठहराया जा सकता है।**34** आई. पी. सी. या केवल दंडनीय अपराध के लिए यू/एस।**307** आईपीसी आर/डब्ल्यू।धारा **34** आई. पी. सी.;

((ii) क्या, अपीलार्थियों को उनके बयान दर्ज करते समय प्रोत्साहन की दोषपूर्ण परिस्थिति को नहीं रखने के कारण।**313** Cr.PC, एस की सहायता से अपीलार्थियों का दोषसिद्धि।**34** आई. पी. सी. दूषित हो गया।

दंड संहिता, **1860**-अभियोजन मामला कि दो परिवारों के बीच झगड़ा हुआ था-मुख्य आरोपी सड़क पर अपने घर गया, अपनी बंदूक लाई और सड़क पर मौजूद जनता पर एक पंक्ति के घर की छत से लाल गोलियां चलाई-गोलियों के परिणामस्वरूप दो व्यक्तियों की मौत हो गई और छत्तीस अन्य घायल हो गए-मुख्य आरोपी (गैर-अपीलकर्ता) को यू/एस दोषी ठहराया गया था।**302** आई. पी. सी.-अपीलार्थियों को यू/एस. द्वारा दोषी ठहराया गया था।**302** आर/डब्ल्यू।धारा **34** आई. पी. सी. और एस.**307** आर/डब्ल्यू।धारा **34** आई. पी. सी.-स्वामित्व:

आयोजित किया गया:अभियोजन पक्ष के गवाहों (अपीलार्थियों की भूमिका के संबंध में) के बयान की बारीकी से जांच से पता चलेगा कि, हालांकि वे मुख्य आरोपी के साथ छत पर आरोपी-अपीलार्थियों की उपस्थिति का खुलासा करते हैं और यह भी कि वे मुख्य आरोपी को प्रतिद्वंद्वी गुट के समर्थकों को न छोड़ने के लिए उकसा रहे थे, वे स्पष्ट नहीं हैं और उक्त दो मृत व्यक्तियों को निशाना बनाने के लिए सुसंगत नहीं हैं-इस बात के ठोस सबूत का अभाव है कि मुख्य आरोपी को दो मृतकों पर फिर से गोली चलाने के लिए उकसाया गया था/उकसाया गया था-सबूत, जो सुसंगत है, मुख्य आरोपी को न छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में है।

381 382

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

प्रतिद्वंद्वी गुट के समर्थक-लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि दोनों मृतक प्रतिद्वंद्वी गुट के समर्थक थे-दो मृतकों पर मुख्य आरोपी द्वारा गोली चलाने के लिए उन्हें प्रत्यावर्ती दायित्व के साथ जोड़ने के लिए सामान्य प्रोत्साहन पर्याप्त नहीं है-मुख्य आरोपी ने दूसरे पक्ष के समर्थकों को सबक सिखाने का संकल्प लिया था-इस तरह के परिदृश्य में, भले ही मुख्य आरोपी को किसी अन्य आरोपी द्वारा उकसाया नहीं गया था, हो सकता है कि वह अपने अधिकार पर मुहर लगाने के लिए अपने हथियार से लाल हो गया हो-इसलिए, दो मृतकों की हत्या उसका अपना व्यक्तिगत कार्य हो सकता है जिसके लिए वह अकेले उत्तरदायी होगा-अभियोजन पक्ष को स्पष्ट और ठोस सबूत देने की आवश्यकता थी कि दो मृतकों पर मुख्य आरोपी द्वारा गोली चलाने के लिए लाल रंग की गोलियां आगे थे।**34** हत्या के अपराध के लिए आई. पी. सी.[पैरा 26 और 31]

दंड संहिता, **1860** -एस. **307** आर/डब्ल्यू।धारा **34** आई. पी. सी.-निम्नलिखित के अधीन दोषसिद्धि:

आयोजित किया गया:साक्ष्य यह है कि अपीलकर्ता मुख्य अभियुक्त के साथ थे, उन्हें प्रतिद्वंद्वी गुट के समर्थकों को नहीं छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, और लक्ष्यों की ओर इशारा करते हुए-हालांकि, साक्ष्य इस बारे में स्पष्ट नहीं हो सकता है कि विशेष रूप से अपीलकर्ताओं के इशारे पर किसे निशाना बनाया गया था, लेकिन यह तथ्य कि अंधाधुंध फाइरिंग लंबे समय तक जारी

रही, मान लीजिए 20-25 मिनट और अपीलकर्ता मौजूद पाए गए और मुख्य अभियुक्त को फिर से करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अपीलकर्ताओं को पता था कि मुख्य अभियुक्त को जो कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था वह इतना खतरनाक था कि यह सभी संभावनाओं में, मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनना चाहिए जिससे किसी व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना है (धारा 300 (चौथा))। 307 एस की सहायता से। 34 आई. पी. सी. का [पैरा 32 और 33]

दंड संहिता, **1860** -धारा **34**-सामान्य इरादा-आवश्यकता:

आयोजित किया गया:एस की सहायता से दायित्व को मजबूत करना। 34 आई. पी. सी. के अनुसार जो आवश्यक रूप से साबित किया जाना चाहिए वह वास्तव में किए गए अपराध को करने का एक सामान्य इरादा है और प्रत्येक अभियुक्त व्यक्ति को उस अपराध के लिए दोषी ठहराया जा सकता है, केवल तभी जब यह सभी के सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने में हो-सामान्य इरादा 383

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का राज्य 384

एक पूर्व संगीत कार्यक्रम का पूर्व-अनुमान लगाता है, हालांकि एक अलग पिछली योजना के अर्थ में पूर्व-संगीत कार्यक्रम आवश्यक नहीं है क्योंकि किसी विशेष परिणाम को लाने का सामान्य इरादा मौके पर ही विकसित हो सकता है-यह सवाल कि क्या कोई सामान्य इरादा था या नहीं, प्रत्येक मामले के सिद्ध तथ्यों और परिस्थितियों से निकाले जाने वाले निष्कर्ष पर निर्भर करता है- इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए परिस्थितियों की समग्रता को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि क्या अभियुक्त का एक समान इरादा था जिससे उन्हें दोषी ठहराया जा सकता था। [पैरा 29]

दंड प्रक्रिया संहिता, **1973**-अपीलार्थियों को उनके बयान दर्ज करते समय प्रोत्साहन की आपत्तिजनक परिस्थिति में नहीं डालने का प्रभाव। **313 Cr.PC, 1973** का:

आयोजित किया गया:अन्य बातों के साथ-साथ, जो कानूनी स्थिति सामने आती है, वह यह है कि एक आरोपी को अपने खिलाफ साक्ष्य में दिखाई देने वाली परिस्थितियों को समझाने में सक्षम बनाने के लिए, साक्ष्य में उसके खिलाफ दिखाई देने वाली सभी दोषपूर्ण परिस्थितियों को उसके सामने रखा जाना चाहिए-लेकिन जहां उन परिस्थितियों को आरोपी के सामने रखने में विफलता हुई है, वही वास्तव में मुकदमे को तब तक दूषित नहीं करेगा जब तक कि यह नहीं दिखाया जाता है कि उसके गैर-अनुपालन ने आरोपी को पूर्वाग्रहित किया है-जहां याचिका दायर करने में देरी हो रही है, या याचिका इस अदालत में पहली बार उठाई गई है, यह माना जा सकता है कि आरोपी द्वारा कोई पूर्वाग्रह महसूस नहीं किया गया था-तत्काल मामले में, अपीलकर्ताओं को उनके खिलाफ अभियोजन मामले के बारे में पता था क्योंकि उन्हें दर्ज की गई प्राथमिकी से अवगत कराया गया था। [पैरा 45]

शहरों और अन्य संदर्भों की सूची

पांडुरंग, तुकिया और भिल्लिया बनाम हैदराबाद राज्य ए. आई. आर. 1955 एस. सी. 216:[1955] एस. सी. आर. 1083; बालू उपनाम बाला सुब्रमण्यम और एक अन्य बनाम राज्य

(केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी) (2016) 15 एस. सी. सी. 471:[2015] 11 एस. सी. आर. 708; मेवा राम और

एक अन्य बनाम राजस्थान राज्य (2017) 11 एस. सी. सी. 272; तारा सिंह बनाम राज्य आकाशवाणी

1951 एससी 441:1951 एससीसी ऑनलाइन एससी 49:[1951] एससीआर 729; एलिस्टर एंथनी

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

परेरा बनाम महाराष्ट्र राज्य (2012) 2 एस. सी. सी. 648:[2012] 1 एस. सी. आर. 145; नर सिंह बनाम हरियाणा राज्य (2015) 1 एस. सी. सी. 496:[2014] 12 एस. सी. आर. 218; शोभित

चमार और एक अन्य बनाम बिहार राज्य (1998) 3 एस. सी. सी. 455:[1998] 2 एस. सी. आर. 117; सत्यवीर सिंह राठी, ए. सी. पी और अन्य बनाम राज्य (2011) 6 एस. सी. सी. 1:[2011] 6

एस. सी. आर. 138-पर निर्भर।

कुलवंत सिंह उर्फ कुलवंश सिंह बनाम बिहार राज्य (2007) 15 एससीसी 670:[2007] 7 एस. सी. आर. 1178; जैनुल हक बनाम बिहार राज्य (1974) 3 एस. सी. सी. 543; हरदेव सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य (1975) 3 एस. सी. सी. 731; मोहन

सिंह और एक अन्य बनाम एम. पी. राज्य (1999) 2 एस. सी. सी. 428:[1999] 1 एससीआर 276;

जहूर और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2011) 15 एस. सी. सी. 218:[2011] 5 एस. सी. आर. 881; बिष्णुपद सरकार और एक अन्य बनाम पश्चिम बंगाल राज्य (2012) 11 एस. सी. सी. 597:[2012] 6 एस. सी. आर. 230; हेट सिंह बनाम मध्य भारत राज्य ए. आई. आर. 1953 एस. सी. 468; सुजीत बिस्वास बनाम असम राज्य (2013) 12 एस. सी. सी. 406:[2013] 3 एससीआर 830; शरद बर्डिचंद शारदा बनाम महाराष्ट्र राज्य (1984) 4 एससीसी 116: [1985] 1 एससीआर 88; समसुल हक बनाम असम राज्य (2019) 18 एससीसी 161; महेश्वर तिग्गा बनाम राजस्थान राज्य (2020) 10 एससीसी 108:[2020] 9 एस. सी. आर. 482; गुलाब बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2022) 12 एस. सी. सी. 677; संदीप बनाम.

हरियाणा राज्य 2021 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 642-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

आपराधिक अपीलीय अधिकारिता: 2011 की आपराधिक अपील No.688।

2004 के सी. आर. एल. ए. No.962 में नई दिल्ली में दिल्ली उच्च न्यायालय के दिनांकित 28.07.2009 निर्णय और आदेश से।

सह

आपराधिक अपील Nos.689 और 2011 का 785।

रूप:

सुदर्शन राजन, महेश कुमार, हितेन बजाज, रोहित भारद्वाज, रमेश रावत, लक्ष्य लारोइया, विजय कुमार शर्मा, मो. कमर अली, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।

जयंत के. सूद, ए. एस. जी., श्रीकांत नीलप्पा तेरदल, मुकुल सिंह, राजेश सिंह चौहान, पी. वी. योगेश्वरन, राजन के. आर. चौरसिया, डॉ. एन. विसकामूर्ति, कार्तिक जसरा, अधिवक्ता।उत्तरदाता के लिए।

385

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का राज्य 386

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

निर्णय

मनोज मिश्रा, जे.

1. ये तीन अपील आपराधिक अपील सं. 1 में पारित दिल्ली उच्च न्यायालय (संक्षेप में "उच्च न्यायालय") के फैसले और आदेश के खिलाफ हैं। 2004 का 962; 2004 का 977; 2004 का 981; 2005 का 14; और 2005 का 61, जिसके द्वारा आपराधिक अपील सं. 2004 का 962; 2004 का 977; 2004 का 981; और 2005 का 61, सुनील (2011 की आपराधिक अपील में अपीलार्थी), श्री कृष्ण (2011 की आपराधिक अपील में अपीलार्थी), रविंदर (2011 की आपराधिक अपील में अपीलार्थी) और बाबू राम उर्फ फौजी (सह-अभियुक्त) को क्रमशः खारिज कर दिया गया, जबकि सह-अभियुक्त विजय की 2005 की आपराधिक अपील को अनुमति दी गई। विवादित निर्णय और आदेश का शुद्ध परिणाम यह है कि 1998 की एफ.

आई. आर. पी. एस. जहांगीर पुरी द्वारा बाबू राम उर्फ फौजी, सुनील, श्री कृष्ण और रविंदर को भारतीय दंड संहिता की धाराओं (संक्षेप में, "आई. पी. सी.") के तहत दोषी ठहराने और सजा सुनाने से उत्पन्न 1999 की सत्र सुनवाई में निचली अदालत (यानी अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, दिल्ली की अदालत) का आदेश, दिनांक आई. डी. 2, भारतीय दंड संहिता की धाराओं (आई. डी. 4) के तहत बाबू राम उर्फ फौजी, सुनील, श्री कृष्ण और रविंदर को दोषी ठहराते हुए खारिज कर दिया गया है, जबकि सह-आरोपी विजय की दोषसिद्धि को दरकिनार कर दिया गया है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बाबू राम उर्फ फौजी को भी शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत सजा सुनाई गई थी, जिसे उच्च न्यायालय ने भी खारिज कर दिया है। अपीलार्थियों, अर्थात् सुनील, श्री कृष्ण और रविंदर को दी गई सजा, जो इन अपीलियों में आक्षेपित है, निम्नानुसार है:

(i) रुपये के साथ आजीवन कारावास। 2000/-, धारा 302/34 आई. पी. सी. के तहत छह महीने आर. आई. की डिफॉल्ट सजा के साथ; और

((ii) पांच साल का आर. आई. रुपये के साथ। 1000/-, धारा 307/34 आई. पी. सी. के तहत तीन महीने की डिफॉल्ट सजा के साथ।

परिचयात्मक तथ्य

2. यह एक ऐसा मामला है, जिसमें बाबू राम उर्फ फौजी (गैर-अपीलकर्ता) द्वारा अपनी लाइसेंस प्राप्त सिंगल बैरल बंदूक से अंधाधुंध फाईंग रिंग के कारण, दो व्यक्ति, अर्थात् अनिल कुमार और विजय, गोली लगने से घायल हो गए और

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

मृत्यु हो गई; और 26 अन्य को छरों से चोटें आईं, जिनमें से कुछ गंभीर प्रकृति की थीं।

3. बाबू राम, जिसने अपनी लाइसेंसी बंदूक से बंदूक की गोलियां चलाईं, ने आत्मरक्षा की याचिका दायर करते हुए अपनी बंदूक 16 इस्तेमाल किए गए और 4 जिंदा गोलियों के साथ पुलिस को सौंप दी। हमारे सामने अपीलकर्ताओं और विजय (जिन्हें उच्च न्यायालय ने बरी कर दिया है) को आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से बाबू राम को फिर से गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित करने वाले व्यक्तियों के रूप में शामिल किया गया था। 4. अभियोजन पक्ष के मामले के अनुसार, 11.11.1998 पर इलाके में तनाव था क्योंकि आरोपी पक्ष के लड़कों ने लाला सतपाल की बेटी को छेड़ा था। उस तनाव को दूर करते हुए दोपहर करीब 3 बजे सतपाल और श्री कृष्ण, जिनके बेटे सुनील मौजूद थे, के बीच बहस हो गई। मंगत राम (पीडब्लू-2) के भाई अनिल कुमार (दो मृतकों में से एक) ने सतपाल का पक्ष लिया। बाबू राम (गैर-अपीलकर्ता) और उनका बेटा रविंदर श्री कृष्ण का पक्ष लेते हुए विवाद में शामिल हो गए। इसके बाद, श्री कृष्ण, उनके बेटे सुनील, बाबू राम और बाबू राम के बेटे रविंदर धमकी देते हुए वहाँ से चले गए कि वे सतपाल और उनके समर्थकों को सबक सिखाएंगे। इसके तुरंत बाद, बाबू राम, श्री कृष्ण, रविंदर और सुनील पीडब्लू-2 के घर की छत पर दिखाई दिए और वहाँ से, श्री कृष्ण, सुनील और रविंदर के उकसावे पर, बाबू राम ने सतपाल के समर्थकों पर लाल गोलियां चलाईं, जिसके परिणामस्वरूप दो लोगों की मौत हो गई और 26 लोग घायल हो गए। 5. अभियोजन पक्ष के अनुसार, घटना की उत्पत्ति दो परिवारों के बीच एक परिवार के युवा पुरुष सदस्यों (यानी श्री कृष्ण के) द्वारा दूसरे परिवार की महिला सदस्यों (यानी सतपाल के परिवार) को चिढ़ाने के कारण हुई थी, इसलिए आरोपी व्यक्तियों के बीच संबंध महत्वपूर्ण माना जाता है, जो नीचे दिया गया है:

(i) श्री कृष्ण बाबू राम की बहन के पति हैं; (ii) सुनील श्री कृष्ण के पुत्र हैं;

((iii) रविंदर बाबू राम का पुत्र है; और

((iv) विजय (पहले ही बरी) श्री कृष्ण का दूर का रिश्तेदार है। 6. अभियोजन पक्ष ने अपने मामले को साबित करने के लिए 56 गवाहों से पूछताछ की। दूसरी ओर, बाबू राम सहित अपीलकर्ताओं ने बचाव पक्ष के 15 गवाहों से पूछताछ की। जैसे ही बाबू राम ने आत्मरक्षा की याचिका ली, निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने उनकी बचाव याचिका की विस्तार से जांच की। बचाव याचिका 387

बाबू राम द्वारा लिया गया था कि एक भीड़ ने उनके घर को घेर लिया था और उसे जलाने की धमकी दी थी। इसलिए, भीड़ को तितर-बितर करने के लिए, गोलियाँ लाल रंग की थीं। स्थल योजना और साक्ष्य के संदर्भ में निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय द्वारा इस बचाव की सावधानीपूर्वक जांच की गई थी। उसी की जांच करने के बाद, यह पाया गया कि जिन लोगों की मौत हुई है, जिनमें घायल हुए लोग भी शामिल हैं, वे सड़क संख्या 300 पर थे, जबकि बाबू राम के घर में सड़क संख्या 300 पर कोई उद्घाटन नहीं था। बल्कि, इसका उद्घाटन सड़क संख्या 400 पर हुआ। उच्च न्यायालय ने देखा कि बाबू राम के घर की पिछली दीवार भी सड़क संख्या 300 के पास नहीं थी जहां यह घटना हुई थी। इतना ही नहीं, रिकॉर्ड पर लाए गए सबूतों से यह स्थापित हुआ कि मंगत राम के घर (यानी घर No.354) की छत से उन लोगों पर गोलियां चलाई गईं जो सड़क No.300 पर खड़े थे या घूम रहे थे। इस परिदृश्य में, बचाव पक्ष की याचिका को अस्वीकार्य पाया गया और इसलिए निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने भी इसे खारिज कर दिया। उस संबंध में विस्तृत कारण उच्च न्यायालय के फैसले के पैराग्राफ 45 से 57 में पाए जा सकते हैं, जो नीचे दिए गए हैं:

“45. हमारी राय में आत्मरक्षा में काम करने के बाबू राम के बचाव से संबंधित विवाद को उठाने की शायद ही कोई गुंजाइश है। बचाव एक दिखावा है।

46. इंस्पेक्टर साजन सिंह द्वारा तैयार की गई साइट योजना, Ex.PW-56/A और तीरथ राज सिंह पीडब्लू-7 द्वारा तैयार की गई साइट योजना, जिसका हमने ऊपर पैरा 11 में विस्तृत संदर्भ दिया है, से पता चलता है कि मृतक विजय और अनिल की सड़क पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मंगत राम पीडब्लू-2 को भी गली No.300 में गोली मार दी गई थी। पीडब्लू-8, पीडब्लू-9, पीडब्लू-13, पीडब्लू-14, पीडब्लू-15 और पीडब्लू-27 ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जब वे सड़क पर थे तब उन्हें गोली लगी थी। ये गवाह उन दो युवा लड़कों से संबंधित हो सकते हैं जिनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई थी और शिकायतकर्ता मंगत राम से भी, लेकिन कहा कि केवल तथ्य ही संदिग्ध को उनकी गवाही नहीं देगा। उक्त छह गवाह ब्लॉक-डी के निवासी हैं और उनके घर गली No.300 पर हैं और इस प्रकार मौके पर उनकी उपस्थिति स्वाभाविक है। उन सभी को गोली लगने के घाव होने से ही घटनास्थल पर उनकी उपस्थिति स्थापित होती है। एक संबंधित गवाह शिकायतकर्ता का रिश्तेदार होने के कारण एक इच्छुक गवाह नहीं है। एक इच्छुक गवाह वह होता है जिसका उद्देश्य अभियुक्त को गलत तरीके से दोषी ठहराना और उसी बयान को गलत तरीके से प्राप्त करना होता है। जैसा कि राजस्थान राज्य बनाम श्रीमती कल्कि और अन्न (1981) 2 एस. सी. सी. 752 के रूप में रिपोर्ट किए गए निर्णय में कहा गया है:- -प.व. 98 का कथन भी उपयोगी रूप से पुनः इस प्रकार पेश किया जा सकता है -

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

“जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उच्च न्यायालय ने दो आधारों पर पी. डब्ल्यू. आई. के साक्ष्य पर भरोसा करने से इनकार कर दिया है: (1) वह एक "अत्यधिक इच्छुक" गवाह थी क्योंकि वह "मृतक की पत्नी है", और (2) उसके साक्ष्य में विसंगतियां थीं। संदर्भ में, हमारी राय में, दोनों आधार अमान्य हैं। क्योंकि, मामले की परिस्थितियों में, वह एकमात्र और सबसे स्वाभाविक गवाह थी; वह घटना के समय मृतक के साथ झोपड़ी में मौजूद एकमात्र व्यक्ति थी, और एकमात्र व्यक्ति थी जिसने घटना को देखा था। यह सच है कि वह मृतक की पत्नी है; लेकिन उसे 'इच्छुक' गवाह नहीं कहा जा सकता है। वह मृतक के रिश्तेदार हैं। संबंधित 'रुचि' के बराबर नहीं है। एक गवाह को केवल तभी 'इच्छुक' कहा जा सकता है जब वह मुकदमे के परिणाम से कुछ लाभ प्राप्त करता है; एक दीवानी मामले में डिक्री में, या एक आरोपी व्यक्ति को दंडित देखने में। एक गवाह जो स्वाभाविक है और किसी मामले की परिस्थितियों में एकमात्र संभावित चश्मदीद गवाह है, उसे 'इच्छुक' नहीं कहा जा सकता है। तत्काल मामले में पी. डब्ल्यू. 1 को वास्तविक अपराधी को बचाने और उत्तरदाताओं को गलत तरीके से फंसाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।”

47. इसके अलावा अभियोजन पक्ष के अन्य गवाहों में पीडब्लू-17, पीडब्लू-23, पीडब्लू-29, पीडब्लू-30, पीडब्लू-33, पीडब्लू-34, पीडब्लू-35, पीडब्लू-36, पीडब्लू-37, पीडब्लू-38, पीडब्लू-39, पीडब्लू-40, पीडब्लू-41 शामिल हैं। पीडब्लू-42, पीडब्लू-43, पीडब्लू-44 और पीडब्लू-46 मृतक या मंगत राम से संबंधित नहीं हैं। कहा गया है कि गवाहों ने गवाही दी है कि उन्हें लगभग 3/3 बजे 11.11.1998 पर गोली के घाव मिले: 30 पीएम। उक्त 17 गवाहों में से पीडब्लू-23, पीडब्लू-29, पीडब्लू-33, पीडब्लू-37, पीडब्लू-38, पीडब्लू-39, पीडब्लू-40, पीडब्लू-41, पीडब्लू-42, पीडब्लू-43, पीडब्लू-44 और पीडब्लू-46 ने स्पष्ट रूप से बयान दिया है कि वे गोली लगने के समय गली में मौजूद थे। अन्य गवाहों ने यह नहीं बताया है कि जब उन्हें गोली लगी थी तो वे कहाँ खड़े थे। पीडब्लू-23, पीडब्लू-29, पीडब्लू-33, पीडब्लू-37, पीडब्लू-38, पीडब्लू-39, पीडब्लू-40, पीडब्लू-41, पीडब्लू-42, पीडब्लू-43, पीडब्लू-44 और पीडब्लू-46 एक-दूसरे से या मृतक या अभियोजन पक्ष

के किसी अन्य गवाह से संबंधित नहीं हैं। उक्त गवाहों की गवाही यह स्थापित करती है कि फ़ाई रिंग उन लोगों की ओर निर्देशित की गई थी जो सड़क पर थे No.300। बाबू राम का घर सड़क No.400 से सटा हुआ है, जो जैसा कि ऊपर पैरा 11 में उल्लेख किया गया है, सड़क No.300 के समानांतर चलता है और दोनों सड़कों को पीछे-पीछे बनाए गए घरों की एक पंक्ति द्वारा अलग किया जाता है।

389 में

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 390

किसी भी तरह से एक अनियंत्रित भीड़ जो सड़क No.300 पर इकट्ठा हुई है, किसी भी घर पर सेट नहीं कर सकती है जो सड़क No.400 पर है। इसके अलावा, बचाव पक्ष के गवाहों की गवाही में झूठ, जो दावा करते हैं कि बाबू राम, अपने घर और अपने और अपने परिवार के सदस्यों के बचाव में काम करते हुए, अपने घर की छत से लाल हो गए हैं, इस तथ्य से स्पष्ट है कि घर की छत पर खड़े होकर, जो बाबू राम का घर है, सड़क पर खड़े किसी भी व्यक्ति को मारना संभव नहीं है। थोड़ी सी ज्यामिति भी यही दिखाएगी। बाबू राम के घर की छत पर किसी भी बिंदु पर खड़े होकर, उक्त स्थान को उनकी छत के किसी भी हिस्से से सड़क पर किसी भी स्थान से जोड़ने वाली सीधी रेखा No.300 छत से होकर गुजरेगी और घर नं. डी-355, डी-356 और डी-357 इसकी उत्तरी सीमा पर सड़क No.300 से सटे हैं।

48. इसके अलावा, बाबू राम के घर के बाहर किसी भी मिट्टी के तेल या पेट्रोल के पाए जाने का कोई सबूत नहीं है। यह बचाव पक्ष के बयान को भी गलत साबित करता है कि दंगाई भीड़ बाबू राम के घर को जलाने की धमकी दे रही थी।

49. इसमें कोई संदेह नहीं है कि एफ. आई. आर. Ex.PW-19/D-3 वास्तव में 9 बजे दर्ज की गई है: 10 पीएम जो डी-ब्लॉक, जहांगीर पुरी में दंगों का सबूत देता है, लेकिन उससे यह साबित नहीं होता है कि बचाव संस्करण सही है। यह भी सच है कि बाबू राम के घर की तस्वीरों से पता चलता है कि उनके घर का दरवाजा तोड़ा गया है और ईंटों के चमगादड़ उनके घर की ओर फेंके गए हैं।

50. जो हुआ वह स्पष्ट है। बाबू राम द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी करने और सड़क पर दो लोगों की गोली मारकर हत्या करने और सड़क पर 26 और लोगों को घायल करने के बाद, यह स्पष्ट था कि भीड़ ने जवाबी कार्रवाई की। साइट प्लान Ex.PW-7/A से पता चलता है कि डी-ब्लॉक जहांगीर पुरी की सड़कों पर घरों का अगला भाग 10 'और गहराई 23' है। 10"। जहांगीर पुरी एक पुनर्वास कॉलोनी है जहाँ झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों को स्थानांतरित किया गया है। 10 'x 23' मापने वाले छोटे भूखंड। 10" सरकार द्वारा पुनर्वास किए गए झुगियों में रहने वालों को आवंटित किया गया है। कॉलोनी में जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में सेकंडों के भीतर भारी भीड़ जमा हो सकती है। यह स्पष्ट है कि बाबू राम द्वारा क्षेत्र में अशांति पैदा करने के बाद क्रोधित भीड़ ने बाबू राम से बदला लेने की मांग की थी। बाबू राम द्वारा 16 चक्कर लगाए जाने पर उनके मन में कोई विवाद नहीं है। कल्पना के किसी भी विस्तार से 16 राउंड के फ़ाई रिंग को कम नहीं किया जा सकता है। अगर एक आदमी

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

जब भीड़ पर 16 राउंड गोलियां चलाई गईं, जिसमें 2 लोगों की मौत हो गई और 26 अन्य घायल हो गए, तो भीड़ जवाबी कार्रवाई करने के लिए बाध्य है।

51. अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि सड़क पर छेड़छाड़ के संबंध में कुछ झगड़ा हुआ था जिसमें सतपाल और आरोपी श्री किशन के परिवार शामिल थे जो बाबू राम के बहनोई हैं। यहां तक कि बचाव पक्ष के गवाहों ने भी 'छेड़छाड़ की घटना' की बात की है। बचाव पक्ष के गवाहों के अनुसार, छेड़छाड़ की घटना की शिकार श्री किशन की बेटी सीमा थी और अभियोजन पक्ष के गवाहों के अनुसार हमलावर श्री किशन के परिवार के सदस्य थे। दोनों गवाहों की गवाही में समानता है कि बाबू राम अपनी बहन सुशीला और सीमा को अपने साथ ले कर सड़क से निकल गए। दोनों संस्करणों में अंतर सह-अभियुक्त की उपस्थिति के बारे में है। अभियोजन पक्ष के गवाहों के अनुसार, उनमें से कुछ ने सभी सह-अभियुक्तों के सड़क पर मौजूद होने की बात कही है, जिसमें से कुछ ने सह-अभियुक्त विजय की उपस्थिति को छोड़ दिया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक सड़क पर झगड़े का कारण जो भी हो, बाबू राम ने खुद को सड़क से सुरक्षित निकाल लिया और अपने घर पहुंच गए।

52. हमने पहले से ही बाबू राम का पीछा करने और उनके घर के आसपास की भीड़ के रिकॉर्ड पर साक्ष्य को देखते हुए बचाव संस्करण को छूट दे दी है। हम पहले ही यह मान चुके हैं कि सबूतों से पता चलता है कि बाबू राम द्वारा सड़क पर रहने वाले व्यक्तियों पर अंधाधुंध रूप से गोली चलाई गई थी और यह तथ्य कि उनका घर सड़क पर है, यह सबूत देता है कि गोली की अंगूठी भीड़ को डराने के लिए नहीं थी जिसने बाबू राम के घर को घेर लिया था। हम पहले ही मान चुके हैं कि सड़क पर किसी के लिए भी No.300 सड़क पर किसी भी घर पर No.400 स्थापित करना संभव नहीं है। हम पहले ही मान चुके हैं कि बाबू राम के घर की छत पर किसी भी स्थान पर खड़े होकर सड़क पर किसी भी व्यक्ति को गोली मारना संभव नहीं था।

53. अपरिहार्य निष्कर्ष यह है कि, जैसा कि अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा दावा किया गया है, बाबू राम अपने घर की छत से मंगत राम के घर की छत पर कूद गया और मंगत राम के घर की छत पर खड़ा हो गया, जिस स्थान पर साइट प्लान पर '4' चिह्नित किया गया था।

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 392

मंगत राम और उनके परिवार के सदस्य जिनके खिलाफ बाबू राम को लाला सतपाल के समर्थक होने की शिकायत थी।

54. इसके अलावा, आत्मरक्षा का अधिकार एक आत्म-सीमित अधिकार है और आत्मरक्षा में काम करने वाले व्यक्ति को केवल ऐसे बल का उपयोग करने के लिए अधिकृत करता है जो उचित और शरीर या संपत्ति के लिए खतरे के अनुरूप हो। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक आवास की रक्षा एक अलग आधार पर होती है और कानून ने हमेशा एक ऐसे व्यक्ति को विशेष अनुग्रह के साथ देखा है जो उसे अवैध रूप से बेदखल करने की कोशिश करने वालों के खिलाफ अपने निवास की रक्षा कर रहा है, क्योंकि हर किसी का घर उसके लिए उसके महल और किले के रूप में है। 55. बाबू राम द्वारा अंधाधुंध फाइलिंग को किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं ठहराया जा सकता है।

56. अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष के गवाहों की गवाही, हालांकि एक अलग दृश्य के साथ सार्वजनिक सड़क पर एक विवाद की उत्पत्ति, श्री कृष्ण और लाला सतपाल के परिवारों को शामिल करते हुए एक सार्वजनिक सड़क पर एक सार्वजनिक विवाद स्थापित करती है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, सबूत यह स्थापित करता है कि बाबू राम ने मंगत राम के घर की छत से लाल रंग की गोली चलाई और सड़क पर लोगों को निशाना बनाया, जहां श्री कृष्ण और लाला सतपाल के परिवार के सदस्यों के बीच झगड़ा हुआ था। यह स्पष्ट है कि बाबू राम को फाई रिंग में ले जाया गया था क्योंकि उन्हें सड़क पर चल रहे झगड़े के बारे में पता चला था। यह स्पष्ट है कि बाबू राम अपनी बहन और अपने बहनोई की सहायता के लिए आया था। यह स्पष्ट है कि बाबू राम ने प्रतिशोध के साथ काम किया है न कि अपनी या अपने घर की रक्षा के लिए। यह बाबू राम का मामला नहीं है कि उसकी बहन का घर या उसकी बहन के परिवार के सदस्य जो सड़क पर No.300 पर थे, खतरे में थे और उन्होंने उनकी रक्षा के लिए फाइलिंग की।

57. किसी भी दृष्टिकोण से देखने पर, बाबू राम अपने कृत्यों के परिणाम से बच नहीं सकते।"

7. जहाँ तक सह-अभियुक्त विजय का संबंध है, उच्च न्यायालय ने उसे संदेह का लाभ देते हुए उसकी अपील को स्वीकार कर लिया क्योंकि केवल एक गवाह ने उसकी भागीदारी के बारे में आरोप लगाया था।

8. अपीलार्थी सुनील, श्री कृष्ण और रविंदर के संबंध में उच्च न्यायालय ने कहा कि मंगत राम (पीडब्लू-2), अशोक कुमार (पीडब्लू-8), कश्मीरी लाल (पीडब्लू-9), दर्शना (पीडब्लू-13), राज कुमार (पीडब्लू-14) और सुशील।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

कुमार (पीडब्लू-15), जो सभी फाइलिंग में घायल हो गए थे, ने स्पष्ट रूप से बयान दिया है कि वे आरोपी विवाद के समय बाबू राम के साथ मौजूद थे और वे सभी बाबू राम के साथ एक साथ चले गए और छत पर बाबू राम को फिर से लड़ने के लिए उकसाते हुए देखा गया। उच्च न्यायालय ने कहा कि हालांकि गवाहों की गवाही में मामूली भिन्नताएं थीं कि किस अभियुक्त ने क्या किया, लेकिन इस तरह के मामूली बदलाव स्वाभाविक थे क्योंकि समय बीतने के साथ स्मृति फीकी पड़ जाती है और किसी के लिए भी घटना के प्रत्येक मिनट के पहलू को याद रखना मुश्किल होता है। नतीजतन, उनकी गवाही पर भरोसा करके, सभी अपीलों को खारिज कर दिया गया।

9. हमने अपीलार्थियों के विद्वान वकील श्री सुदर्शन राजन और राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली) के विद्वान अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल श्री जयंत के. सूद को सुना है।

अपीलार्थियों की ओर से प्रस्तुतियाँ

10. अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने कहा कि यह एक ऐसा मामला है जिसमें प्रमुख आरोपी बाबू राम ने स्वीकार किया था कि उसने अपने लाइसेंस प्राप्त हथियार से भीड़ पर हमला किया था। एक बार ऐसी स्थिति होने पर, अदालत को सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता थी कि क्या अपीलकर्ता, जो परिवार का हिस्सा थे, उन्हें प्रोत्साहन की भूमिका सौंपकर, सामान्य दुश्मनी के कारण फंसाया गया था। इसके अलावा, अभियोजन पक्ष के मामले के अनुसार, सड़क पर रहने वाले लोगों पर छत से गोली चलाई गई थी। इस प्रकार सड़क पर मौजूद गवाहों के लिए यह अनुमान लगाना मुश्किल होगा कि कौन उपदेश दे रहा था और कौन नहीं, विशेष रूप से जब छत पर तीन से अधिक व्यक्ति थे। इसके अलावा, यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि हमलावर के साथ केवल उपस्थिति यह मानने के लिए पर्याप्त नहीं है कि वे सभी मुख्य आरोपी के साथ समान इरादे रखते हैं और यह कि आपराधिक कार्य सभी के समान इरादे को आगे बढ़ाने के लिए किया गया है। अन्यथा भी, अभियोजन पक्ष के साक्ष्य स्पष्ट नहीं हैं कि क्या दो मृतकों यानी अनिल और विजय पर गोलियाँ सभी अभियुक्तों के समान इरादे को आगे बढ़ाने के लिए चलाई गई थीं। इसलिए, भले ही यह माना जाए कि किसी स्तर पर अपीलकर्ताओं ने बाबू राम को फिर से गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित किया था, स्पष्ट और ठोस सबूत के अभाव में कि बाबू राम को दो मृतकों पर फिर से गोली चलाने के लिए उकसाया गया था, अपीलकर्ताओं को आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से धारा 242 के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। इस प्रकार, सबसे खराब स्थिति में, अपीलकर्ताओं को केवल आई. पी. सी. की धारा 307/34 के तहत दोषी ठहराया जा सकता है। यह तर्क दिया गया था कि क्योंकि तीनों अपीलकर्ताओं में से प्रत्येक पहले ही पांच वर्षों से अधिक की सजा काट चुका है।

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 394 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 12 एस. सी. आर.

आई. पी. सी. की धारा 307/34 के तहत दंडनीय अपराध के लिए उन्हें जो सजा दी गई थी, उनकी अपीलों को स्वीकार किया जाए और उनकी सजा को आई. पी. सी. की धारा 307/34 के तहत दंडनीय अपराध के लिए पहले से ही दी गई सजा की अवधि तक कम किया जाए।

11. उपरोक्त के अलावा, अपीलकर्ताओं के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि अपीलकर्ताओं का मुकदमा एक मौलिक दोष के लिए पर्याप्त है क्योंकि अपीलकर्ताओं द्वारा बाबू राम को दो मृत/सार्वजनिक/घायल लोगों पर फिर से गोली चलाने के लिए उकसाने/उकसाने के बारे में आपत्तिजनक परिस्थिति को दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (संक्षेप में, "<ID1") की धारा 313 के तहत उनके बयान दर्ज करते समय अपीलकर्ताओं के सामने कभी नहीं रखा गया था। इसलिए, अपीलार्थियों द्वारा मुख्य अभियुक्त के प्रोत्साहन/उकसावे के लिए साक्ष्य में दिखाई देने वाली दोषपूर्ण परिस्थिति पर विचार करने से बचना होगा।

12. अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने दो व्यापक प्रस्तावों पर कई निर्णयों का हवाला दिया, अर्थात्:

(ए) कब, प्रोत्साहन की भूमिका के आधार पर, आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से दोषसिद्धि को बनाए रखा जा सकता है।

(i) बालू उपनाम बाला सुब्रमण्यम और एक अन्य बनाम राज्य (पांडिचेरी का केंद्र शासित प्रदेश) 1;

((ii) कुलवंत सिंह उर्फ कुलवंश सिंह बनाम बिहार राज्य 2, (iii) जैनुल हक बनाम बिहार राज्य 3;

((iv) हरदेव सिंह और एक अन्य बनाम पंजाब राज्य 4; (v) मेवा राम और एक अन्य बनाम राजस्थान राज्य 5; (vi) मोहन सिंह और एक अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य। 6.

1 (2016) 15 एससीसी 471 2 (2007) 15 एससीसी 670 3 (1974) 3 एससीसी 543 4 (1975) 3 एससीसी 731 5 (2017) 11 एससीसी 272 6 (1999) 2 एससीसी 428

(vii) जहूर और अन्य बनाम उत्तर प्रदेश राज्य 7;

(viii) बिष्णुपद सरकार और एक अन्य बनाम पश्चिम बंगाल राज्य 8.

(बी) आई. डी. 1 की धारा 313 के तहत अपना बयान दर्ज करते समय अभियुक्त के सामने न रखी गई आपत्तिजनक परिस्थितियों पर विचार नहीं किया जाना चाहिए। जिन निर्णयों का उल्लेख किया गया वे थे:

(i) हेट सिंह बनाम मध्य भारत राज्य 9; (ii) सुजीत विश्वास बनाम असम राज्य 10;

((iii) शरद बर्डिचंद शारदा बनाम महाराष्ट्र राज्य 11; (iv) समसुल हक बनाम असम राज्य 12; और

(v) महेश्वर तिगा बनाम राजस्थान राज्य 13.

राज्य की ओर से प्रस्तुतियाँ

13. राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली) की ओर से यह प्रस्तुत किया गया कि साक्ष्य के अनुसार, बहस के बाद, बाबू राम अपीलार्थियों के साथ यह धमकी देते हुए वहाँ से चले गए कि वे दूसरे पक्ष और उनके समर्थकों को सबक सिखाएंगे। इसके तुरंत बाद, वे सभी छत पर दिखाई दिए और अपीलकर्ताओं को बाबू राम को दूसरे पक्ष और उनके समर्थकों पर हमला करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए देखा गया। गोली लगने से दो लोगों की मौत हो गई और 26 अन्य घायल हो गए। ऐसी परिस्थितियों में, सभी अभियुक्तों ने व्यक्तियों को ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने के लिए समान इरादे का प्रदर्शन किया कि वे जानते थे कि यह उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बन सकता है जिसे यह हुआ है। इसके अलावा, कई गोलियाँ लाल रंग की थीं। इसलिए, यह एक स्पष्ट मामला है कि हमलावर को प्रोत्साहित करने वाले अपीलकर्ताओं ने उसके साथ समान इरादे साझा किए थे।

14. अभियुक्त अपीलार्थियों को उनके बयान दर्ज करते समय प्रोत्साहन नहीं दिए जाने की आपत्तिजनक परिस्थिति के बारे में

7 (2011) 15 एससीसी 218 8 (2012) 11 एससीसी 597 9 एआईआर 1953 एससी 468 10 (2013) 12 एससीसी 406 11 (1984) 4 एससीसी 116 12 (2019) 18 एससीसी 161 13 (2020) 10 एससीसी 108 395

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 396

सी. आर. पी. सी. की धारा 313 के अनुसार, यह प्रस्तुत किया गया था कि भले ही यह उनके सामने नहीं रखा गया था, लेकिन उनका कोई पूर्वाग्रह नहीं था, जो निम्नलिखित परिस्थितियों से स्पष्ट है: (क) अपीलार्थियों का प्रतिनिधित्व पूरे समय उनके वकील द्वारा किया गया था; (ख) अपीलार्थियों/उनके वकील की उपस्थिति में गवाहों का बयान दर्ज किया गया था; (ग) उनके वकील ने अपीलार्थियों द्वारा उनके बयान के संबंध में गवाहों से विशेष रूप से जिरह की; और (घ) घटना की प्राथमिकी, जिसमें एक उकसाने वाले के रूप में उनकी भूमिका का खुलासा किया गया था, उन्हें दी गई थी। इसलिए, यह माना जा सकता है कि वे अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में उनके खिलाफ दिखाई देने वाली आपराधिक परिस्थितियों से पूरी तरह से अवगत थे। फिर भी, उन्होंने निचली अदालत या उच्च न्यायालय के समक्ष किसी भी तरह के पूर्वाग्रह के बारे में कोई याचिका नहीं ली। अतः इस न्यायालय के समक्ष पहली बार उठाई गई इस याचिका पर विचार नहीं किया जाना चाहिए।

15. अपनी दलीलों के समर्थन में, राज्य के विद्वान वकील ने दो व्यापक प्रस्तावों पर निर्णयों का हवाला दिया, अर्थात्:

(क) आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से दोषसिद्धि को प्रोत्साहन की भूमिका के लिए दर्ज किया जा सकता है। जिन निर्णयों का उल्लेख किया गया वे थे:

(i) गुलाब बनाम उत्तर प्रदेश राज्य 14; और (ii) संदीप बनाम हरियाणा राज्य 15

(ख) जब तक अभियुक्त के प्रति पूर्वाग्रह नहीं दिखाया जाता है, तब तक किसी भी आपत्तिजनक परिस्थिति को रखने में विफलता, अपने आप में, मुकदमे को दूषित नहीं करेगी। जिन निर्णयों का उल्लेख किया गया वे थे:

((i) नर सिंह बनाम हरियाणा राज्य 16;

((ii) एलिस्टर एंथनी परेरा बनाम महाराष्ट्र राज्य 17; और (iii) सत्यवीर सिंह राठी, एसीपी और अन्य बनाम राज्य 18।

चर्चा और विश्लेषण

16. हमने प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों पर विचार किया है और रिकॉर्ड को ध्यान से देखा है। प्रस्तुतियों से निपटने से पहले, यह उपयोगी होगा

14 (2022) 12 एस. सी. सी. 677

15 2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 642 16 (2015) 1 एससीसी 496

17 (2012) 2 एस. सी. सी. 648

18 (2011) 6 एससीसी 1

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

उन तथ्यों को दोहराना जो साबित हुए हैं और जिनके बारे में कोई गंभीर विवाद नहीं है, अर्थात् -

(क) इस घटना की उत्पत्ति दो परिवारों यानी एक तरफ श्री कृष्ण का परिवार और दूसरी तरफ सतपाल का परिवार के बीच विवाद में हुई थी। विवाद का कारण एक परिवार ने दूसरी पर आरोप लगाया कि उनकी लड़कियों को दूसरे परिवार के लड़कों द्वारा छेड़ा जा रहा है।

(ख) जिन गोलीयों से दो मृतक के साथ-साथ छत्तीस अन्य लोग घायल हुए, उन सभी को बाबू राम (गैर-अपीलार्थी) ने गोली मार दी, जिसे आई. पी. सी. की धारा 302 के तहत दोषी ठहराया गया और सजा सुनाई गई है।

(ग) बाबू राम जिस बंदूक का उपयोग फिर से गोली चलाने के लिए करता था, वह उसे लाइसेंस प्राप्त था। (घ) बाबू राम उस समय मौजूद थे जब दोनों पक्षों के बीच झड़प हुई थी।

(ई) बाबू राम श्री कृष्ण के बहनोई हैं।

(च) बाबू राम का घर सड़क संख्या 400 पर खुलता है जबकि सतपाल का घर सड़क संख्या 1 पर खुलता है। हालांकि मामले के संबंध में तैयार की गई स्थल योजना में श्री कृष्ण के घर के सटीक स्थान का खुलासा नहीं किया गया है, हालांकि, उनके पते से, जो डी-291, जहांगीर पुरी, दिल्ली के रूप में पता चलता है, ऐसा प्रतीत होता है कि उनका घर सतपाल के घर (जो डी-294 है) के पास है, और उसी सड़क पर है।

17. जिस स्थान पर यह घटना हुई वह एक भीड़भाड़ वाली कॉलोनी है। उच्च न्यायालय के फैसले के पैराग्राफ 11 में दो सड़कों यानी 300 और 400 के स्थान और उनके बीच के घरों का विस्तार से वर्णन किया गया है, जिसकी शुद्धता को गंभीरता से चुनौती नहीं दी गई है। इस प्रकार, उस स्थान की स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करने के लिए, हम नीचे दिए गए विवादित निर्णय के पैराग्राफ 11 को निकालना उचित समझते हैं:

“11. दो साइट योजनाओं के अनुसार, डी ब्लॉक जहांगीर पुरी में सड़क No.400 और सड़क No.300, पश्चिम-पूर्वी दिशाओं में एक दूसरे के समानांतर चलती हैं। सड़क No.400 उत्तर की ओर है और सड़क No.300 दक्षिण की ओर है। सड़क No.400 की चौड़ाई 16 "है। 6"। सड़क No.300 की चौड़ाई 15 "है। 10"। दोनों सड़कों के बीच की दूरी 47 "है। 8"। दोनों सड़कों के बीच की यह दूरी कोई खाली जगह नहीं है 397

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 398

लेकिन इसमें 23 "की गहराई वाले घरों की एक पंक्ति शामिल है। 10"। यह स्पष्ट करने के लिए, घरों की एक पंक्ति जो हाउस No.361 से 368 तक है, उसकी गहराई 23 "है। 10" और ये घर सड़क No.400 से सटे हैं। इन घरों में घरों की एक पंक्ति है जिस पर No.353 से 359 तक है और प्रत्येक घर की गहराई 23 "है। 10"। ये घर सड़क No.300 की ओर खुलते हैं। सड़क पर No.353 से 359 वाले घरों की पंक्ति के विपरीत No.300 घर Nos.298 से 293 हैं। यह स्पष्ट है कि घर No.353 से 359 तक के दरवाजे दक्षिणी दिशा में सड़क No.300 पर खुलते हैं और घर Nos.298 से 293 तक के दरवाजे उत्तर दिशा की ओर सड़क No.300 पर खुलते हैं। स्थल योजना में, जिन स्थानों पर अनिल और विजय को गोली मारी

गई थी, उन्हें 1 और 2 चिह्नित किया गया है।वे 3 'की दूरी पर हैं।6" और घर No.295 और घर No.294 की चारदीवारी से क्रमशः 3 "।जिस स्थान पर मंगत राम को गोली मारी गई थी, वह बिंदु संख्या 3 पर दिखाया गया है जो घर की चारदीवारी से लगभग 3 "की दूरी पर भी है।जिस स्थान पर बाबू राम का चित्र लाल बताया गया है, उसे स्थान संख्या 4 के रूप में दिखाया गया है और यह मंगत राम के घर की छत पर है। साइट प्लान से पता चलता है कि बाबू राम का घर (आईडी2) रमेश चंद के घर (आईडी1) के साथ है और मंगत राम का घर (आईडी3) रमेश चंद के घर के पश्चिम की ओर रमेश चंद के घर के बगल में है। ... ".

18. ऊपर निकाली गई उच्च न्यायालय की टिप्पणियों से जो पता चलता है वह यह है कि सड़क Nos.300 और 400 के बीच घरों की दो पंक्तियाँ हैं।घरों की एक पंक्ति का रास्ता उत्तर की ओर सड़क No.400 पर है, जबकि दूसरी का रास्ता दक्षिण की ओर सड़क No.300 पर है।घरों की तीसरी पंक्ति, सड़क संख्या 300 के दक्षिण में, सड़क No.300 पर उत्तर की ओर खुलती है।सतपाल का घर उस पंक्ति में है, जबकि बाबू राम का घर उत्तर की ओर है, जो सड़क संख्या 400 पर खुलता है।

19.साक्ष्य के अनुसार, फाई रिंग की घटना से पहले सड़क No.300 पर झगड़ा हुआ था।बहस के बाद, बाबू राम उस जगह से चला गया, सड़क पर अपने घर गया, सड़क पर मौजूद जनता पर अपनी बंदूक ले आया और एक पंक्ति के घर की छत से लाल गोलियाँ चलाई, जो अभियोजन पक्ष के अनुसार मंगत राम का घर है। स्थल योजना की बारीकी से जांच से पता चलता है कि जिस स्थान पर गोली लगने से घायल हुए थे, उस स्थान को निशाना नहीं बनाया जा सकता था, अगर बाबू राम के घर की छत से गोलियाँ लाल रंग की होतीं।इसलिए, दोनों निचली अदालतों ने अविश्वास किया

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

बाबू राम का निवेदन है कि वह अपने घर को घेरने वाली भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आत्मरक्षा में लाल गोलियाँ चलाते हैं।

अपीलार्थियों की भूमिका

20. अब हम अपीलार्थियों की भूमिका के संबंध में साक्ष्य की जांच करेंगे।ऐसा करने से पहले, यह ध्यान रखना उचित होगा कि दो मृतक, अनिल और विजय, सतपाल से संबंधित नहीं हैं, जिसके साथ श्री कृष्ण और उनके परिवार (यानी आरोपी पक्ष) का झगड़ा हुआ था।इसलिए, यह दिखाने के लिए कि सभी अभियुक्तों का एक समान इरादा उन व्यक्तियों को शारीरिक नुकसान पहुँचाने का था, जिन्होंने चोटों के कारण दम तोड़ दिया, अभियोजन पक्ष ने पीड़ितों का वर्णन करने के लिए सतपाल के हिमायती (यानी समर्थक) शब्द का उपयोग किया है।और अपीलार्थियों के खिलाफ आरोप को घर लाने के लिए, अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि सभी अभियुक्त व्यक्तियों ने समान इरादे का प्रदर्शन किया क्योंकि वे एक साथ उस स्थान से बंदूक उठाने के लिए बाबू राम के आवास पर जाने के लिए चले गए जहां विवाद हो रहा था।इतना ही नहीं, वे छत पर एक साथ दिखाई दिए जब सतपाल के समर्थकों पर गोली चल रही थी।

अपीलार्थियों की भूमिका के संबंध में कुछ गवाही

21. मृतक अनिल के भाई पीडब्लू-2 (मंगत राम) ने कहा कि श्री कृष्ण, उनके बेटे सुनील, बाबू राम और उनके बेटे रविंदर ने विवाद के बाद लाला सतपाल और उनके समर्थकों को सबक सिखाने की धमकी देते हुए मौके से चले गए; इसके तुरंत बाद, वे सभी बाबू राम के घर की छत पर आ गए और फिर पीडब्लू-2 के घर की छत पर कूद गए, जो बाबू राम के घर के साथ पीछे की दीवार साझा करता है; और वहाँ से, बाबू राम ने फाइरी खोली, जबकि अपीलकर्ता उन्हें सतपाल या उनका समर्थन करने वाले किसी भी व्यक्ति को नहीं छोड़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे।22. पीडब्लू-9, कश्मीरी लाल, घटना का अधिक स्पष्ट विवरण देते हैं।वह बताता है कि लगभग 3 बजे, जब वह अपने घर में था, सतपाल और श्री कृष्ण के बीच सतपाल की बेटी को छेड़ने से संबंधित किसी घटना को लेकर बहस शुरू हो गई।इस बीच सुनील आया और बाबू राम और उसका बेटा भी।उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया कि वे गली (गली) के लोगों को नहीं बर्ख्शेंगे क्योंकि उन्होंने श्री कृष्ण को परेशान किया है।इसके बाद चारों आरोपी धमकी देते हुए चले गए।इसके तुरंत बाद, वे बाबू राम के घर की छत पर दिखाई दिए।फिर बाबू राम ने फाई रिंग शुरू कर दी। पहला शॉट अनिल को लगा।दूसरा शॉट मंगत राम के दाहिने पैर में लगा। इसके बाद, बाबू राम ने अंधाधुंध रूप से गोली चलाई, और कई लोगों को गोली लगी।

जब बाबू राम को अंधाधुंध रूप से गिरफ्तार किया गया था, तो अन्य आरोपी, सुनील, श्री कृष्ण और बाबू राम के बेटे, बाबू राम को सतपाल के किसी भी हिमायती (समर्थक) को नहीं छोड़ने के लिए उकसा रहे थे।

23. मृतक विजय के पिता पीडब्लू-8 अशोक कुमार ने घटनाओं के क्रम के बारे में स्पष्ट होने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि आरोपी फौजी उर्फ बाबू राम ने पहली बार अपनी बंदूक से हवा में गोली चलाई; फिर आरोपी चिल्लाया कि वे किसी को नहीं बर्खशेंगे; इसके बाद, श्री कृष्ण और सुनील ने फौजी से कहा कि वे जिन लोगों की ओर इशारा करते हैं, उन पर हमला करें; रविंदर और विजय ने भी चिल्लाया कि किसी को भी बर्खशा नहीं जाना चाहिए; साथ ही अन्य अभियुक्तों ने भी फौजी से कहा कि वे जिन लोगों की ओर इशारा करते हैं, उन पर हमला करें, ताकि सतपाल के किसी भी मददगार (यानी समर्थक) को बर्खशा न जाए; फिर फौजी फी लाल, एक गोली मृतक अनिल उर्फ काला को लगी, साथ ही मंगत राम को भी; इसके बाद आरोपी सुनील और रविंदर ने पीडब्लू-8 के बेटे विजय की ओर इशारा किया और फौजी को प्रोत्साहित किया।

24. जिरह के दौरान, अशोक कुमार (पीडब्लू-8) ने कहा कि-- उसने झगड़ा देखा था; आरोपी के जाने के बाद, वह उनके पीछे चला गया; हालाँकि, उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि उसका कोई रिश्तेदार झगड़े की जगह के पास है या नहीं; आरोपी बाबू राम के घर की ओर चला गया, जबकि वह अपने घर गया था; अपने घर पहुंचने के बाद, उसने अपने जूते पहने, फिर, साढ़े चार मिनट के बाद, उसने बंदूक की गोलियों की आवाज सुनी; वह तुरंत अपने घर से बाहर आया और लोगों को भागते हुए देखा; लगभग 1 मिनट तक फ़ाई रिंग जारी रही; उसे कोई चोट नहीं लगी और उसके घर की ओर कोई गोली नहीं आई; घटना से पहले आरोपी के साथ उसकी कोई दुश्मनी नहीं थी।

25. इस स्तर पर, हम देख सकते हैं कि मंगत राम (पीडब्लू-2) (यानी मृतक अनिल का भाई) को भी किसी भी आरोपी और अनिल के बीच किसी भी तरह की दुश्मनी के बारे में पता नहीं था। श्री कृष्ण के साथ बहस के दौरान अनिल के सतपाल का पक्ष लेने के बारे में पीडब्लू-2 के बयान में कोई स्पष्टता नहीं है। वास्तव में, जिरह के दौरान, पीडब्लू-2 ने कहा कि-- बहस उस स्थान से लगभग 10-12 की दूरी पर हुई थी जहाँ वह लेटा हुआ था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

अपने खाट पर; उस समय सुशील (उसका दूसरा भाई) और अनिल (मृतक) घर के अंदर थे; लाला और श्री कृष्ण के बीच बहस के समय रविंदर, विजय और बाबू वहां नहीं थे; बाबू राम लगभग 2.45 बजे विवाद वाली जगह पर पहुंचे और लगभग 10 मिनट तक रहे; वह यह नहीं बता सकते कि कितने लोग वहां आए थे; वह यह नहीं बता सकते कि सतपाल के साथ कितने लोग रह गए थे, जब बाबू राम चले गए। पीडब्लू-2 ने विशेष रूप से कहा कि न तो वह और न ही उनके भाई अनिल किसी के समर्थक थे। हालाँकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने अभियुक्तों को छत पर खड़े देखा, उनके विवाद की जगह छोड़ने के कुछ ही मिनट बाद। उन्होंने यह भी कहा कि जिस स्थान पर वह खाट पर लेटे हुए थे, वहां से बाबू राम को नहीं देखा जा सका। इसके अलावा, वह यह नहीं बता सके कि कितने मिनट तक फाइरिंग जारी रही क्योंकि उन्हें और उनके भाई को चोटें आईं और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। अपीलार्थियों द्वारा निभाई गई भूमिका के संबंध में, पीडब्लू-2 ने कहा कि उसका भाई अनिल दूसरी तरफ से आ रहा था, जब बाबू राम को उस पर हमला करने के लिए उकसाया गया था। पीडब्लू-2 ने स्पष्ट किया कि न तो उनकी और न ही अनिल की बाबू राम या किसी अन्य आरोपी व्यक्ति के साथ कोई पूर्व शत्रुता थी और न ही उन्होंने और न ही उनके भाई ने कभी लाला सतपाल का समर्थन किया।

26. इन गवाहों के बयान की बारीकी से जांच से पता चलता है कि, हालांकि वे छत पर बाबू राम के साथ आरोपी-अपीलकर्ताओं की उपस्थिति का खुलासा करते हैं और यह भी कि वे सतपाल के समर्थकों को नहीं छोड़ने के लिए बाबू राम को उकसा रहे थे, वे दो मृतक (यानी, अनिल और विजय) के बारे में स्पष्ट और सुसंगत नहीं हैं जिन्हें बाबू राम द्वारा वर्तमान अपीलकर्ताओं के उकसावे पर निशाना बनाया जा रहा है। इस बात के ठोस सबूत की अनुपस्थिति कि बाबू राम को दो मृतकों पर फिर से गोली चलाने के लिए उकसाया गया था, महत्वपूर्ण है क्योंकि इन गवाहों की गवाही से न तो विजय और न ही अनिल प्रतिद्वंद्वी गुट यानी सतपाल के समर्थक थे, जिनके साथ आरोपी पक्ष की दुश्मनी थी। ऐसी परिस्थितियों में, सवाल यह उठेगा कि क्या विजय और अनिल नाम के दो मृतकों की हत्या के बारे में यह कहा जा सकता है कि अपीलकर्ताओं का हमलावर बाबू राम के साथ एक समान इरादा था ताकि धारा 34 आई. पी. सी. की सहायता से आई. पी. सी. की धारा 242 के तहत उन्हें दोषी ठहराया जा सके।

चाहे साक्ष्य के आधार पर, अपीलकर्ताओं को धारा 34 आई. पी. सी. की सहायता से अनिल और विजय की हत्या के अपराध के लिए दोषी ठहराया जा सकता है या केवल धारा 307 आई. पी. सी. के तहत दंडनीय अपराध के लिए 34 आई. पी. सी. के साथ पढ़ा जा सकता है।

401

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 402 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 12 एस. सी. आर.

27. इससे पहले कि हम उपरोक्त मुद्दे पर ध्यान दें, कानून की जांच करना उपयोगी होगा कि धारा 34 की सहायता से कब दोषसिद्धि होगी।

आई. पी. सी. बनाया जा सकता था। पांडुरंग, तुकिया और भिल्लिया बनाम राज्य

हैदराबाद 19, इस न्यायालय ने कहा: “33. अब धारा 34 के मामले में हम सोचते हैं कि यह अच्छी तरह से स्थापित है कि एक सामान्य इरादा पूर्व संगीत कार्यक्रम का अनुमान लगाता है। इसके लिए एक पूर्व-व्यवस्थित योजना की आवश्यकता होती है क्योंकि इससे पहले कि किसी व्यक्ति को दूसरे के आपराधिक कृत्य के लिए अप्रत्यक्ष रूप से दोषी ठहराया जा सके, यह कार्य उन सभी के सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने के लिए किया गया होगा: महबूब शाह बनाम राजा-सम्राट। तदनुसार मन की एक पूर्व बैठक होनी चाहिए थी। कई व्यक्ति एक साथ एक व्यक्ति पर हमला कर सकते हैं और प्रत्येक का एक ही इरादा हो सकता है, अर्थात् मारने का इरादा, और प्रत्येक व्यक्तिगत रूप से एक अलग घातक प्रहार कर सकता है और फिर भी किसी का भी अनुभाग द्वारा आवश्यक सामान्य इरादा नहीं होगा क्योंकि पूर्व-निर्धारित योजना बनाने के लिए दिमाग की कोई पूर्व बैठक नहीं थी। इस तरह के मामले में, प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा की गई किसी भी चोट के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होगा, लेकिन किसी को भी अन्य के किसी भी कार्य के लिए प्रत्यक्ष रूप से दोषी नहीं ठहराया जा सकता है; और यदि अभियोजन पक्ष यह साबित नहीं कर सकता है कि उसका अलग प्रहार घातक था, तो उसे हत्या का दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, हालांकि स्पष्ट रूप से उसके मामले में हत्या करने का इरादा साबित किया जा सकता है: बरेंद्र कुमार घोष बनाम राजा-सम्राट और महबूब शाह बनाम राजा-सम्राट जैसा कि बाद के मामले में उनके अधिपति कहते हैं, “जो विभाजन उनकी सीमाओं को विभाजित करता है, वह अक्सर बहुत कम होता है: फिर भी, यह अंतर वास्तविक और महत्वपूर्ण है, और यदि इसकी अनदेखी की जाती है तो इसके परिणामस्वरूप न्याय की विफलता होगी।

34. योजना को विस्तृत होने की आवश्यकता नहीं है, न ही लंबे समय के अंतराल की आवश्यकता है। यह अचानक उत्पन्न हो सकता है और अचानक बन सकता है, उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति किसी व्यक्ति को मारने में मदद करने के लिए राहगीरों को बुलाता है और वे, या तो अपने शब्दों या अपने कार्यों से, उसे अपनी सहमति का संकेत देते हैं और हमले में उसके साथ शामिल हो जाते हैं। तब मन की आवश्यक बैठक होती है। एक पूर्व-व्यवस्थित योजना है, हालांकि जल्दबाजी में बनाई गई और अशिष्ट रूप से

कल्पना की गई। लेकिन पूर्व-व्यवस्था और पूर्व नियोजित संगीत कार्यक्रम होना चाहिए। जैसा कि बाद के प्रिवी काउंसिल मामले में है, यह पर्याप्त नहीं है

19 ए. आई. आर. 1955 एससी 216

एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से एक ही इरादा, उदाहरण के लिए, दूसरे को बचाने का इरादा और यदि आवश्यक हो, तो विरोध करने वालों को मारना।”

(बल दिया गया)

28. बालू उर्फ बाला सुब्रमण्यम 1 में, इस न्यायालय ने निर्णय दिया:

“11. आई. पी. सी. की धारा 34 को लागू करने के लिए, यह स्थापित किया जाना चाहिए कि आपराधिक कार्य सभी के सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने के लिए एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा किया गया था। इसलिए, यह साबित किया जाना चाहिए कि: (i) किसी विशेष अपराध को करने के लिए कई व्यक्तियों की ओर से समान इरादा था, और (ii) अपराध वास्तव में उनके द्वारा उस सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने के लिए किया गया था। आई. पी. सी. की धारा 34 के तहत दायित्व का सार एक विशेष

परिणाम लाने के लिए आपराधिक कार्रवाई में भाग लेने वाले व्यक्तियों का एक साथ जागरूक मन है। सामान्य इरादे को साझा करने के बारे में मन संतुष्ट हो जाता है जब एक स्पष्ट कार्य स्थापित किया जाता है।

प्रत्येक अभियुक्त। सामान्य इरादे का तात्पर्य पूर्व-व्यवस्थित योजना और पूर्व-व्यवस्थित योजना के अनुसार सामूहिक रूप से कार्य करना है। सामान्य इरादा वास्तव में किए गए अपराध को करने का इरादा है और प्रत्येक आरोपी व्यक्ति को उस अपराध के लिए दोषी ठहराया जा सकता है, केवल तभी जब उसने उस सामान्य इरादे में भाग लिया हो।"

(जोर दिया गया) ऊपर के रूप में अवलोकन करने के बाद, पैराग्राफ 15 में, यह देखा गया:

"15. आई. पी. सी. की धारा 34 के तहत, एक अलग पिछली योजना के अर्थ में एक पूर्व-संगीत कार्यक्रम को साबित करने की आवश्यकता नहीं है। एक विशेष परिणाम लाने का सामान्य इरादा मौके पर ही विकसित हो सकता है जैसा कि मामले के तथ्यों के संदर्भ में कई व्यक्तियों के बीच होता है और

स्थिति की परिस्थितियाँ। यह सवाल कि क्या कोई सामान्य इरादा था या नहीं, प्रत्येक मामले के सिद्ध तथ्यों और परिस्थितियों से लिए जाने वाले निष्कर्ष पर निर्भर करता है। इस निष्कर्ष पर पहुँचने में परिस्थितियों की समग्रता को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि क्या अभियुक्त का ऐसा अपराध करने का एक समान इरादा था जिससे उन्हें दोषी ठहराया जा सके।"

(जोर दिया गया) 29. ऊपर देखे गए निर्णयों से जो बात स्पष्ट है, वह यह है कि आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से दायित्व को बढ़ाने के लिए 403 होना आवश्यक है।

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 404

साबित होना वास्तव में किए गए अपराध को करने का एक सामान्य इरादा है और प्रत्येक अभियुक्त व्यक्ति को उस अपराध के लिए दोषी ठहराया जा सकता है, केवल तभी जब यह सभी के सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने में हो। सामान्य इरादा एक पूर्व संगीत कार्यक्रम का पूर्व-अनुमान लगाता है, हालांकि एक अलग पिछली योजना के अर्थ में पूर्व-संगीत कार्यक्रम आवश्यक नहीं है क्योंकि एक विशेष परिणाम लाने का सामान्य इरादा मौके पर ही विकसित हो सकता है। यह सवाल कि क्या कोई सामान्य इरादा था या नहीं, प्रत्येक मामले के सिद्ध तथ्यों और परिस्थितियों से लिए जाने वाले निष्कर्ष पर निर्भर करता है। इस निष्कर्ष पर पहुँचने में परिस्थितियों की समग्रता को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि क्या अभियुक्त का ऐसा अपराध करने का एक समान इरादा था जिससे उन्हें दोषी ठहराया जा सके।

30. मेवा राम और अन्य 5 में, अभियुक्त अपीलार्थी ने शिकायतकर्ता को मारने का आह्वान किया था, लेकिन मारा गया व्यक्ति कोई और था। यह इंगित करने के लिए कोई सबूत नहीं था कि अभियुक्त-अपीलार्थी ने मृतक की हत्या के बारे में कुछ भी कहा था। उस पृष्ठभूमि में, इस न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित करते हुए कि अभियुक्त-अपीलार्थी को आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, इस न्यायालय के पहले के फैसलों पर भरोसा रखते हुए कहा: "12. उपरोक्त से ध्यान देने वाली बात यह है कि अपीलार्थी मोहन लाल द्वारा दिया गया उपदेश शिकायतकर्ता हरबंस सिंह को मारने का था। अभियोजन पक्ष द्वारा यह दिखाने के लिए प्रस्तुत किए गए उक्त प्रोत्साहन के अलावा कोई सबूत नहीं है कि अपीलार्थी मोहन लाल ने मृतक डिप्टी सिंह की हत्या के बारे में कुछ भी कहा था। जहां तक डिप्टी सिंह की हत्या का संबंध है, यह निचली अदालत द्वारा की गई मौलिक गलती है और उच्च न्यायालय द्वारा मोहन लाल की ओर से उक्त उपदेश का उपयोग करने में दोहराया गया है। मेवा लाल ने किस परिस्थिति में डिप्टी सिंह को गोली मारी थी, यह रिकॉर्ड से स्पष्ट नहीं है जब विवाद एक ओर दो भाइयों (अपीलकर्ता-यहाँ) और दूसरी ओर शिकायतकर्ता हरबंस सिंह के बीच था। इन तथ्यों पर, यह बिल्कुल नहीं कहा जा सकता है कि आरोपी व्यक्तियों का डिप्टी सिंह की हत्या करने का कोई समान इरादा था। 13. यह देखा गया है कि सामान्य इरादा और संयुक्त इरादे के बीच मौलिक अंतर है। आई. पी. सी. की धारा 34 सामान्य इरादे की बात करती है जो वास्तव में किए गए अपराध को करने का इरादा है और प्रत्येक अभियुक्त व्यक्ति को उस अपराध के लिए केवल तभी दोषी ठहराया जा सकता है जब उसने उस सामान्य इरादे में भाग लिया हो और मुख्य अभियुक्त के समान दायित्व के साथ जोड़ा हो जो अपराध का अपराधी था।"

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

31. हाथ में मामले पर लौटते हुए, जब हम इस मामले के तथ्यों की जांच करते हैं, तो हम देखते हैं कि दोनों मृतक अनिल और विजय थे। अभियुक्त पक्ष में उनके (यानी दोनों मृतक) प्रति कोई दुश्मनी या द्वेष नहीं था। अभियोजन पक्ष का सबूत है कि चारों आरोपी उस जगह से एक साथ चले गए जहां विवाद हुआ था और जल्द ही उन सभी को पीडब्लू-2 के घर की छत पर देखा गया, जहां से बाबू राम ने प्रतिद्वंद्वी गुट का समर्थन करने वालों को सबक सिखाने के उद्देश्य से घर खोला था। न तो पीडब्लू-2 और न ही पीडब्लू-8, जिनके भाई और बेटे की क्रमशः मृत्यु हो गई थी, ने कहा कि दोनों मृतकों ने सतपाल (यानी प्रतिद्वंद्वी समूह) का समर्थन किया था। बल्कि, उनके अनुसार, दोनों मृतकों की किसी भी आरोपी व्यक्ति के साथ कोई दुश्मनी नहीं थी। इसके अलावा, गवाहों के बयान सुसंगत नहीं हैं जो उचित संदेह से परे स्थापित करते हैं कि अपीलकर्ताओं ने बाबू राम को अनिल या विजय यानी दो मृतकों पर फिर से गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित किया था। सबूत, जो सुसंगत है, बाबू राम को सतपाल के समर्थकों को नहीं छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में है। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि दोनों मृतक सतपाल के समर्थक थे। हमारे विचार में, यह सामान्य उपदेश दोनों मृतकों पर बाबू राम द्वारा गोली चलाने के लिए उन्हें प्रत्यावर्ती दायित्व के साथ जोड़ने के लिए पर्याप्त नहीं है, विशेष रूप से जब गवाहों की गवाही सुसंगत नहीं है कि क्या दोनों मृतकों को अपीलकर्ताओं द्वारा दिए गए उपदेश से पहले या बाद में गोली मार दी गई थी। हालाँकि, सबूतों से जो बात निश्चित है, वह यह है कि हमलावर बाबू राम के पास बंदूक के साथ-साथ इसका उपयोग करने का उद्देश्य भी था, क्योंकि उसके रिश्तेदार श्री कृष्ण का विवाद के दौरान अपमान किया गया था। इसके अलावा, बाबू राम ने दूसरे पक्ष के समर्थकों को सबक सिखाने का संकल्प लिया था। इस तरह के परिदृश्य में, भले ही बाबू राम को किसी अन्य आरोपी द्वारा उकसाया नहीं गया था, लेकिन हो सकता है कि उसके पास अपने अधिकार पर मुहर लगाने के लिए अपने हथियार से लाल रंग हो और इसलिए, दोनों मृतकों की हत्या उसका अपना व्यक्तिगत कार्य हो सकता है जिसके लिए वह अकेले उत्तरदायी होगा। इन परिस्थितियों में, आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से दो मृतकों की हत्या के लिए अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराने के लिए, अभियोजन पक्ष को स्पष्ट और ठोस सबूत देने की आवश्यकता थी कि बाबू राम द्वारा दोनों मृतकों पर की गई गोलियां सभी के समान इरादे को आगे बढ़ाने के लिए थीं। इसके अभाव में, जैसा कि वर्तमान मामले में है, हमारे सुविचारित विचार में, आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से अपीलार्थियों को हत्या के अपराध के लिए दोषी ठहराना अत्यंत असुरक्षित होगा।

32. अब, हमारे विचार के लिए जो प्रश्न आता है वह यह है कि क्या अपीलार्थी आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से धारा 307 के तहत दंडनीय अपराध के लिए अपने दायित्व से बच सकते हैं। हमारे विचार में, उत्तर 405

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 406

यह इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या बाबू राम सहित अपीलकर्ताओं ने आई. पी. सी. 20 की धारा 300 में निर्दिष्ट किसी एक या अधिक कृत्य को सभी के सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने के लिए किया था, यदि घायल व्यक्ति (ओं) ने अपनी चोटों के कारण दम तोड़ दिया था।

33. तत्काल मामले में सबूत यह है कि अंधाधुंध फाई रिंग लंबे समय तक जारी रही, कुछ कहते हैं कि 20 से 25 मिनट तक। गली No.300 पर छत्तीस लोगों को छरों से चोटें आईं। उल्लेखनीय है कि बाबू राम के पास से 16 खाली कारतूस जब्त किए गए थे। सबूत यह है कि अपीलकर्ता आरोपी बाबू राम के साथ थे, उन्हें सतपाल के समर्थकों को नहीं छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे, और लक्ष्य की ओर इशारा करते थे। हालाँकि, साक्ष्य इस बारे में स्पष्ट नहीं हो सकता है कि विशेष रूप से अपीलकर्ताओं के कहने पर किसे निशाना बनाया गया था, लेकिन यह तथ्य कि अंधाधुंध फाई रिंग लंबे समय तक जारी रही, मान लीजिए 20-25 मिनट और अपीलकर्ता मौजूद पाए गए और बाबू राम को प्रोत्साहित करते हुए, हमारे विचार में,

20 “300. हत्या।- इसके बाद के मामलों को छोड़कर, गैर-इरादतन हत्या हत्या है, यदि वह कार्य जिसके द्वारा मृत्यु हुई है, मृत्यु के इरादे से किया गया है, या-दूसरा।-यदि यह ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से किया जाता है, जो उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनने की संभावना के बारे में जानता है, जिसे नुकसान पहुँचाया गया है, या-तीसरा।-यदि यह किसी व्यक्ति को शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से किया जाता है और सूजन के लिए शारीरिक चोट प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त है, या -

चौथा।-यदि कार्य करने वाला व्यक्ति जानता है कि यह इतना आसन्न रूप से खतरनाक है कि यह सभी संभावनाओं में, मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनता है जिससे मृत्यु होने की संभावना है, और मृत्यु या ऐसी चोट के जोखिम के लिए बिना किसी बहाने के ऐसा कार्य करता है जैसा कि ऊपर कहा गया है।

दृष्टान्त

(a) A उसे मारने के इरादे से Z को गोली मार देता है। Z परिणामस्वरूप मर जाता है। एक हत्या करता है। (ख) ए, यह जानते हुए कि जेड ऐसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है कि एक प्रहार से उसकी मृत्यु होने की संभावना है, उसे शारीरिक चोट पहुंचाने के इरादे से मारता है। Z प्रहार के परिणामस्वरूप मर जाता है। ए हत्या का दोषी है, हालांकि प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में आघात स्वास्थ्य की अच्छी स्थिति में किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है। लेकिन अगर ए, यह न जानते हुए कि जेड किसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है, उसे ऐसा झटका देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में किसी व्यक्ति को स्वास्थ्य की अच्छी स्थिति में नहीं मारेगा, तो यहां ए, हालांकि वह शारीरिक चोट पहुंचाने का इरादा रखता है, हत्या का दोषी नहीं है, अगर उसका इरादा मृत्यु का कारण बनने का नहीं था, या ऐसी शारीरिक चोट जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनती है।

(ग) ए जानबूझकर जेड को एक तलवार-कट या क्लब-घाव देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में एक आदमी की मौत का कारण बनता है। Z परिणामस्वरूप मर जाता है। यहाँ, ए हत्या का दोषी है, हालाँकि उसका इरादा जेड की मृत्यु का कारण बनने का नहीं हो सकता है।

(घ) ए बिना किसी बहाने के लोगों की भीड़ में भरी हुई तोप से हमला करता है और उनमें से एक को मार देता है। ए हत्या का दोषी है, हालाँकि हो सकता है कि उसके पास किसी विशेष व्यक्ति को मारने की पूर्व नियोजित योजना न हो।"

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अपीलकर्ताओं को इस बात की जानकारी थी कि जिस कार्य को करने के लिए बाबू राम को प्रोत्साहित किया गया था, वह इतना आसन्न रूप से खतरनाक था कि यह सभी संभावनाओं में, मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनता है जिससे किसी व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना हो (आई. पी. सी. की धारा 300 (चौथी) को चित्रण (डी) के साथ देखें)। इसलिए, बाबू राम द्वारा सतपाल के कई राहगीरों/समर्थकों पर गोली चलाने को, यदि सभी नहीं तो, सभी के समान इरादे को आगे बढ़ाने के लिए कई व्यक्तियों द्वारा किया गया एक आपराधिक कार्य कहा जा सकता है। यद्यपि ऊपर वर्णित कारणों से दो मृत व्यक्तियों की हत्या के अपराध के लिए अपीलकर्ताओं को प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी ठहराना सुरक्षित नहीं हो सकता है, लेकिन घटना की प्रकृति, घायल व्यक्तियों की संख्या और अपीलकर्ताओं की भूमिका को देखते हुए, हमारा विचार है कि अपीलार्थी आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से धारा 307 के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी ठहराए जाने के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार, हमारे सुविचारित विचार में, उस सीमा तक निचली अदालतों के निर्णय में किसी भी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 313 के तहत अपने बयान दर्ज करते समय अपीलार्थियों को उकसाने की आपत्तिजनक परिस्थिति में नहीं डालने का प्रयास।

34. अब हमारे विचार के लिए जो प्रश्न आता है वह यह है कि क्या दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अपने बयान दर्ज करते समय अपीलार्थियों को उकसाने की आपत्तिजनक परिस्थिति में नहीं रखने के कारण, आई. पी. सी. की धारा 34 की सहायता से अपीलार्थियों की दोषसिद्धि दूषित हो गई। 35. अभिलेख के अवलोकन से यह पता चलता है कि अपीलार्थियों सहित सभी अभियुक्तों पर दिनांक 17.01.2001 के एक सामान्य आरोप निर्धारण आदेश द्वारा आरोप लगाया गया था, जो निम्नानुसार है:

"आई, आर. के. शर्मा, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, दिल्ली एतद्द्वारा रघुवीर दयाल के पुत्र बाबू राम उर्फ फौजी; ज्वाला प्रसाद के पुत्र श्री कृष्ण, श्री कृष्ण के पुत्र सुनील; लाला राम के पुत्र विजय और बाबू राम के पुत्र रविंदर पर निम्नलिखित आरोप लगाते हैं:

कि पी. एस. जहांगीर पुरी, दिल्ली के अधिकार क्षेत्र में घर संख्या 286, जहांगीर पुरी, दिल्ली के पास गली डी-300 में दोपहर 3 बजे आप सभी ने अपने सामान्य इरादे को आगे बढ़ाते हुए मृतक अनिल कुमार @काला और विजय की जानबूझकर हत्या कर दी और इस तरह धारा 302/34 आई. पी. सी. के तहत दंडनीय अपराध किया।

दूसरा, उक्त तिथि, समय और स्थान पर, आप सभी ने समान इरादे को आगे बढ़ाते हुए 26 व्यक्तियों को चोट पहुंचाई, जिनके नाम श्रीमती. सतीश्वरी, मंगत राम, अंजू, प्रदीप, सनी, रामदेव, मरियम, नईम, जफर, मतलुफ अली, सलीम, जुबेदा, राज कुमार, तरुण, बुंदू, दर्शना, मोहम्मद।शाहिद, वासुदेव, प्रिया संजय, चंदर कला, मोहिनी देवी, अनवरी, गुलशेर, हामिद मोहम्मद। और शाहिद अहमद इस तरह के इरादे से और ऐसी परिस्थितियों में कि यदि उक्त चोटों से अभियुक्त अपीलार्थियों ने उक्त व्यक्तियों की मृत्यु का कारण बना होता, तो आप हत्या के दोषी होते और इस प्रकार धारा 307/34 आई. पी. सी. के तहत दंडनीय अपराध करते।

और मैं एतद्वारा निर्देश देता हूं कि आप सभी पर उक्त अपराध के लिए इस अदालत द्वारा मुकदमा चलाया जाए।

हस्ताक्षर किए।

एसजे, दिल्ली

तिथि 17.01.2001 "36. उदाहरण के रूप में, अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में उनके खिलाफ दिखाई देने वाली आपराधिक परिस्थितियों के लिए दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत आरोपी अपीलार्थियों से उनकी प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए पूछे गए कुछ प्रश्नों को नीचे निकाला जा रहा है:

“(i) यह आपके खिलाफ सबूत है कि 11.11.98 पर एक बयान मंगत राम द्वारा दिया गया था, जो सामूहिक रूप से रक्का एक्स में निहित था। पीडब्लू2/ए जिस पर औपचारिक एफ. आई. आर. दर्ज की गई थी, जिसकी कार्बन कॉपी Ex.PW19/E है। आपको क्या कहना है?

(ii) यह आपके खिलाफ सबूत है कि जहांगीर पुरी में सदन संख्या 286 के पास गली में दोपहर करीब 3 बजे आपने अन्य सह-अभियुक्तों के साथ मिलकर समान इरादे से अनिल कुमार उर्फ काला और विजय की जानबूझकर हत्या कर दी थी। आपको क्या कहना है?

(iii) यह आपके खिलाफ सबूत है कि उक्त तिथि, समय और स्थान पर, आपने अपने सह-अभियुक्त के साथ सामान्य इरादे को आगे बढ़ाने में 26 व्यक्तियों को चोट पहुंचाई, अर्थात् श्रीमती। सतीश्वरी, मंगत राम, अंजू, प्रदीप, सनी, रामदेव, मरियम, नईम, जफर, मतलुफ अली, सलमा, जुबेदा, राज कुमार, तरुण, बुंदू,

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

दर्शना, मोहम्मद।शाहिद, वासुदेव, प्रिया संजय, चंदर कला, मोहिनी देवी, अनवर, गुलशन, हामिद मोहम्मद।और शाहिद अहमद इस इरादे से और ऐसी परिस्थितियों में कि यदि उक्त चोटों के कारण आप उक्त व्यक्ति की मौत का कारण बनते, तो आप हत्या के दोषी होते और इस प्रकार धारा 307/34 I. P. C. के तहत अपराध करते। आपको क्या कहना है?

(iv) यह आपके खिलाफ सबूत है कि उक्त तिथि, समय और स्थान पर, सह-अभियुक्त बाबू राम ने आई. पी. सी. की धारा 302/307/34 आई. पी. सी. के तहत दंडनीय अपराध करते समय एक बार फिर से हथियार का इस्तेमाल किया और इस प्रकार शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत एक अपराध किया। आपको क्या कहना है?” ऊपर निकाली गई आपत्तिजनक परिस्थितियों के अलावा, विभिन्न अन्य साक्ष्य जैसे चोट रिपोर्ट, वसूली ज्ञापन, शव परीक्षण/चिकित्सा रिपोर्ट आदि को आरोपी अपीलार्थियों को धारा 313 सी. आर. पी. सी. के तहत उनके बयान दर्ज करते समय रखा गया था।

37. अपीलार्थियों ने आपत्तिजनक परिस्थितियों से इनकार किया और कहा कि-वे मौके पर मौजूद नहीं थे; सुशील और बाबू राम के रिश्तेदार होने के कारण उन्हें इस मामले में झूठा फंसाया गया है; इलाके में हंगामा हुआ था, इसलिए वे सच्चाई जानने के लिए अपने रिश्तेदारों के घर गए; वहां पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया और शिकायतकर्ता के कहने पर गलत तरीके से फंसाया गया।

38.दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत बयान दर्ज करने से संबंधित अभिलेखों के अवलोकन पर, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अपीलार्थियों द्वारा निभाई गई सटीक भूमिका को चित्रित करने वाले विभिन्न गवाहों की गवाही का सार अपीलार्थियों को उनके बयान दर्ज करने के उद्देश्य से नहीं दिया गया था।हालाँकि, क्या यह अपने आप में उनके विश्वास को दूषित करेगा, यह एक ऐसा सवाल है जिसके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है।

39. तारा सिंह बनाम राज्य 21 में, इस न्यायालय को दंड प्रक्रिया संहिता, 1898 की धारा 342 के उद्देश्य पर विचार करने का अवसर मिला था, जो दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के समान है। उस संदर्भ में, पीठ की ओर से बोलते हुए, न्यायमूर्ति विवियन बोस ने कहा:

21 एआईआर 1951 एससी 441:1951 एससीसी ऑनलाइन एससी 49 409

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 410

“38. इस धारा का पूरा उद्देश्य अभियुक्त को उन परिस्थितियों को समझाने का एक निष्पक्ष और उचित अवसर प्रदान करना है जो उसके खिलाफ दिखाई देती हैं। इसलिए पूछताछ निष्पक्ष होनी चाहिए और इसे ऐसे रूप में रखा जाना चाहिए जिसकी एक अज्ञानी या अनपढ़ व्यक्ति सराहना कर सके और समझ सके। यहां तक कि जब कोई आरोपी व्यक्ति अनपढ़ नहीं होता है, तब भी जब वह हत्या के आरोप का सामना कर रहा होता है तो उसका दिमाग परेशान होने के लिए तैयार होता है। इसलिए वह किसी जटिल प्रश्न के महत्व को समझने की स्थिति में नहीं है। इसलिए निष्पक्षता की आवश्यकता है कि प्रत्येक भौतिक परिस्थिति को सरल और अलग तरीके से इस तरह से रखा जाना चाहिए कि एक अनपढ़ मन, या जो परेशान या भ्रमित है, वह आसानी से समझ और समझ सके। मेरा यह सुझाव नहीं है कि इस संबंध में प्रत्येक त्रुटि या चूक अनिवार्य रूप से एक परीक्षण को दूषित कर देगी क्योंकि मेरा मानना है कि इस प्रकार की त्रुटियां उपचार योग्य अनियमितताओं की श्रेणी में आती हैं। इसलिए, प्रत्येक मामले में सवाल इस बात पर निर्भर करता है कि त्रुटि की मात्रा क्या है और क्या पूर्वाग्रह पैदा हुआ है या होने की संभावना है।”

(बल दिया गया)

40. एलिस्टर एंथनी परेरा बनाम महाराष्ट्र राज्य 22 में, संक्षेप में

दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अभियुक्त की जाँच से संबंधित कानून में, इस न्यायालय ने कहा:

“61. उपरोक्त से, कानूनी स्थिति इस प्रकार प्रतीत होती है: अभियुक्त को उसके खिलाफ अभियोजन पक्ष द्वारा लाए गए दोषपूर्ण साक्ष्य और सामग्रियों से अवगत कराया जाना चाहिए ताकि वह ऐसे साक्ष्य और सामग्री को समझाने और उसका जवाब देने में सक्षम हो सके। अभियोजन पक्ष द्वारा विशिष्ट रूप से और अलग से लाए गए दोषारोपण करने वाले साक्ष्य और दोषारोपण सामग्री की ओर अभियुक्त का ध्यान आकर्षित न करने में विफलता अपने आप में अभियुक्त के खिलाफ मुकदमे को अमान्य और कानून की दृष्टि से बुरा नहीं बना सकती है; यदि पहले, उसे दिए गए सभी प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए, उसे यह समझाने का अवसर दिया गया था कि वह उसके खिलाफ अभियोजन मामले के संबंध में क्या कहना चाहता था और दूसरा, इस तरह की चूक ने उसके लिए पूर्वाग्रह पैदा नहीं किया है जिसके परिणामस्वरूप न्याय की विफलता हुई है। अभियुक्त पर यह स्थापित करने का भार है कि उसे अपराध साबित करने वाले साक्ष्य से अवगत नहीं कराया जाए और

22 (2012) 2 एस. सी. सी. 648

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 12 एस सी आर।

उसके खिलाफ अभियोजन पक्ष के साक्ष्य में जो दोषारोपण सामग्री आई थी, एक पूर्वाग्रह पैदा किया गया है जिसके परिणामस्वरूप न्याय की विफलता हुई है।”

(जोर दिया गया) 41। नर सिंह 16 में, इस न्यायालय को निर्णयों की एक श्रृंखला की समीक्षा करने और उपलब्ध पाठ्यक्रमों के बारे में कानून को संक्षेप में प्रस्तुत करने का अवसर मिला, जब भी किसी अपीलीय न्यायालय के समक्ष यह याचिका दायर की जाती है कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अपना बयान दर्ज करते समय आरोपी को कुछ आपत्तिजनक परिस्थितियों में रखने में विफलता हुई है। उस संदर्भ में यह देखा गया था: “30. जब भी अपीलीय न्यायालय में महत्वपूर्ण साक्ष्य पर अभियुक्त से प्रश्न पूछने में चूक का अनुरोध किया जाता है, तो अपीलीय न्यायालय के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रमों को संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है:

30.1 जब भी दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के गैर-अनुपालन की याचिका उठाई जाती है, तो यह अपीलीय अदालत की शक्तियों के भीतर होता है कि वह दोषी या आरोपी की ओर से पेश वकील की जांच और आगे की जांच करे और मामले पर

निर्णय लेने के लिए उक्त उत्तरों पर विचार किया जाएगा। यदि अभियुक्त अपीलीय न्यायालय को ऐसी परिस्थिति का कोई उचित स्पष्टीकरण देने में असमर्थ है, तो न्यायालय यह मान सकता है कि अभियुक्त के पास ऐसा करने के लिए कोई स्वीकार्य स्पष्टीकरण नहीं है।

30.2 मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, यदि अपीलीय न्यायालय इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कोई पूर्वाग्रह नहीं हुआ था या न्याय की विफलता नहीं हुई थी, तो अपीलीय न्यायालय सुनवाई करेगा और गुण-दोष के आधार पर मामले का फैसला करेगा।

30.3 यदि अपीलीय न्यायालय की राय है कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के प्रावधानों का पालन न करने से अभियुक्त के प्रति पूर्वाग्रह पैदा हुआ है या होने की संभावना है, तो अपीलीय न्यायालय अभियुक्त के बयान दर्ज करने के चरण से उस बिंदु से, जहां अनियमितता हुई है, यानी दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत अभियुक्त से पूछताछ करने के चरण से, पुनः सुनवाई का निर्देश दे सकता है और विचारण न्यायाधीश को अभियुक्त और बचाव पक्ष के गवाह, यदि कोई हो, की नए सिरे से जांच करने और मामले का नए सिरे से निपटारा करने का निर्देश दिया जा सकता है।

30.4 अपीलीय न्यायालय 411 के मुकदमे में पहले से ही लंबे समय तक बिताए जाने के कारण मामले को पुनः सुनवाई के लिए निचली अदालत को भेजने से इनकार कर सकता है।

सुनील बनाम दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.] 412

मामला और दोषी द्वारा पहले से दी गई सजा की अवधि और मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, अभियुक्त को हुए पूर्वाग्रह को ध्यान में रखते हुए, अपील पर अपने गुण-दोष के आधार पर निर्णय लिया जा सकता है।
(बल दिया गया)

42. शोभित चमार और एक अन्य बनाम बिहार राज्य **23** में, इस न्यायालय ने

निर्णयों की एक श्रृंखला की जांच करते हुए, यह अभिनिर्धारित किया गया कि सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष अपील में पहली बार दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के गैर-अनुपालन के आधार पर दोषसिद्धि को चुनौती तब तक नहीं दी जा सकती जब तक कि अपीलार्थी यह प्रदर्शित नहीं करते कि उनके प्रति पूर्वाग्रह पैदा किया गया है। पैराग्राफ 24 में निहित प्रासंगिक टिप्पणियों को नीचे निकाला गया है:

“24. हमने पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा भरोसा किए गए इन सभी रिपोर्ट किए गए निर्णयों का अध्ययन किया है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई हिचकिचाहट नहीं देखते हैं कि इस अपील में पहली बार दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के गैर-अनुपालन के आधार पर दोषसिद्धि को चुनौती तब तक नहीं दी जा सकती जब तक कि अपीलार्थी यह प्रदर्शित नहीं करते कि उनके प्रति पूर्वाग्रह पैदा किया गया है। वर्तमान मामले में जैसा कि पहले संकेत दिया गया था, अभियोजन पक्ष ने चश्मदीद गवाहों के नेत्र साक्ष्य पर दृढ़ता से भरोसा किया और इस साक्ष्य के संदर्भ में प्रासंगिक प्रश्न अपीलार्थियों के सामने रखे गए। यदि इन गवाहों का साक्ष्य स्वीकार्य पाया जाता है, तो दोषसिद्धि तब तक कायम रखी जा सकती है जब तक कि अपीलार्थियों द्वारा यह नहीं दिखाया जाता है कि उनके प्रति पूर्वाग्रह पैदा किया गया है। हमारे सामने ऐसा कोई पूर्वाग्रह नहीं दिखाया गया था और इसलिए, हम अपीलार्थियों की ओर से उठाए गए तर्क को स्वीकार करने में असमर्थ हैं।”

(जोर दिया गया) 43। शोभित चमार 22 में इस न्यायालय की टिप्पणियों के आधार पर,

जिन्हें सत्यवीर सिंह राठी, एसीपी और अन्य **18** में ऊपर निकाला गया है।

यह देखा गया: “77. ... ये टिप्पणियां इस सिद्धांत पर आगे बढ़ती हैं कि यदि धारा 313 के बयान के बारे में कोई आपत्ति जल्द से जल्द ली जाती है, तो अदालत दोष को ठीक कर सकती है और एक अतिरिक्त बयान दर्ज कर सकती है क्योंकि यह सभी के हित में होगा, लेकिन अगर मामले को लंबे समय तक चलने दिया जाए।

23 (1998) 3 एससीसी 455

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

और आपत्तियों को देर से लिया जाता है, यह अभियोजन पक्ष के साथ-साथ अभियुक्त के लिए भी एक कठिन स्थिति होगी।

78. हमारे समक्ष मामले में, जैसा कि पहले ही संकेत दिया जा चुका है, दोषपूर्ण 313 बयानों के बारे में निचली अदालत में आपत्ति नहीं उठाई गई थी। इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि अपीलार्थियों द्वारा कोई पूर्वाग्रह महसूस नहीं किया गया था, यह मानते हुए भी कि अभियोजन पक्ष की कहानी में कुछ दोषपूर्ण परिस्थितियों को छोड़ दिया गया था। हम यह भी स्वीकार करते हैं कि श्री शरण द्वारा हमारे सामने रखे गए पंद्रह प्रश्नों में से अधिकांश साक्ष्य पर निचली अदालत द्वारा निकाले गए निष्कर्ष हैं। अपीलार्थियों के विद्वान वकील द्वारा इस पहलू पर दी गई चुनौती को भी खारिज कर दिया जाता है।"

(जोर दिया गया) 44। ऊपर देखे गए निर्णयों से, अन्य बातों के साथ-साथ, जो कानूनी स्थिति सामने आती है, वह यह है कि किसी अभियुक्त को उसके खिलाफ साक्ष्य में दिखाई देने वाली परिस्थितियों को समझाने में सक्षम बनाने के लिए, साक्ष्य में उसके खिलाफ दिखाई देने वाली सभी दोषपूर्ण परिस्थितियों को उसके सामने रखा जाना चाहिए। लेकिन जहां उन परिस्थितियों को अभियुक्त के सामने रखने में विफलता हुई है, वही वास्तव में मुकदमे को दूषित नहीं करेगा जब तक कि यह नहीं दिखाया जाता है कि इसके गैर-अनुपालन ने अभियुक्त को पूर्वाग्रहित किया है। जहां याचिका दायर करने में देरी होती है, या इस न्यायालय में पहली बार याचिका दायर की जाती है, यह माना जा सकता है कि अभियुक्त द्वारा कोई पूर्वाग्रह महसूस नहीं किया गया था।

45. तत्काल मामले में, हालांकि हम यह नहीं बता सके कि मुख्य आरोपी बाबू राम को उकसाने वाले अपीलकर्ताओं से संबंधित आपराधिक परिस्थिति को अपीलकर्ताओं के सामने स्पष्ट रूप से रखा गया था, वे उनके खिलाफ अभियोजन मामले के बारे में जानते थे, क्योंकि प्रश्न संख्या (i), उन्हें पीडब्लू-2 द्वारा दर्ज की गई प्राथमिकी से अवगत कराया गया था, जिसमें मुख्य आरोपी बाबू राम को फिर से गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित करने वालों के रूप में उनकी भूमिका को चित्रित किया गया था। इसके अलावा, प्रश्न संख्या (iv) यह स्पष्ट किया गया था कि बाबू राम द्वारा गोली लाल रंग में चलाई गई थी। और प्रश्न (ii) और (iii) ने संकेत दिया कि अपीलार्थियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही थी क्योंकि उन्होंने मुख्य अभियुक्त के साथ समान इरादे से अपराध में भाग लिया था। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए और यह भी कि अपीलकर्ताओं का प्रतिनिधित्व उनके वकील ने किया था और उन्होंने अभियोजन पक्ष के गवाहों से जिरह की थी, फिर भी उन्होंने निचली अदालत या उच्च न्यायालय के समक्ष ऐसी कोई याचिका नहीं उठाई, यह सुरक्षित रूप से माना जा सकता है कि अपीलकर्ताओं ने उस मामले में कोई पूर्वाग्रह नहीं दिखाया था। इससे भी अधिक, जब अपीलार्थियों का मामला पूर्ण इनकार का था, यानी कि वे घटना के समय उपस्थित नहीं थे, 413

सुनील बनाम राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का राज्य [मनोज मिश्रा, जे.]

जिसे निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने भी अस्वीकार कर दिया था। इसलिए हमारा विचार है कि अपीलार्थियों की दोषसिद्धि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के प्रावधानों के कथित गैर-अनुपालन के लिए दूषित नहीं है।

निष्कर्ष

46. ऊपर की हमारी चर्चा को ध्यान में रखते हुए, हालांकि हम आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 242 के तहत अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को कायम रखते हैं, हम आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 307 के तहत अपीलार्थियों की दोषसिद्धि को बरकरार रखते हैं और इसके द्वारा आई. पी. सी. की धारा 307/34 के तहत दंडनीय अपराध के लिए अपीलार्थियों को दी गई सजा को लागू करते हैं। नतीजतन, अपीलों को आंशिक रूप से अनुमति दी जाती है। आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 302 के तहत अपीलार्थियों की दोषसिद्धि और सजा को दरकिनार कर दिया जाता है और अपीलार्थियों को उक्त आरोप से बरी कर दिया जाता है। हालांकि, आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 307 के तहत उनकी दोषसिद्धि और सजा, जैसा कि निचली अदालत द्वारा दी गई है और उच्च न्यायालय द्वारा दी गई है, बरकरार रखी जाती है और एतद्वारा लागू की जाती है। अपीलार्थियों के जमानत पर होने की सूचना है। उनके जमानत बांड रद्द कर दिए जाते हैं। वे आई. पी. सी. की धारा 307/34 के तहत निचली अदालत द्वारा दी गई शेष सजा, यदि कोई हो, पूरी करने के लिए तुरंत आत्मसमर्पण करेंगे। यदि अपीलकर्ता धारा 307/34 आई. पी. सी. के तहत उन्हें दी गई सजा पहले ही पूरी कर चुके हैं, तो उन्हें अभिलेखों/अभिरक्षा प्रमाण पत्रों के सत्यापन के बाद हिरासत में लेने की आवश्यकता नहीं है।

47. उपरोक्त निर्देशों के साथ, तीनों अपीलों का निपटारा कर दिया गया है

से।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपीलों का निपटारा किया गया।

अंकित ज्ञान